ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 3 अंक : 2 दिसम्बर 2012 -जनवरी 2013 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

सूर्य की उपासना में जल क्यों?	डा. महेश पारासर	2
दैनिक जीवन को उपयोगी बनाने के सूत्र	डा. रचना भारद्वाज	4
सब पर राज करना चाहते हैं सिंह लग्न वाले	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
पितृ ऋण बने जब परेशानी का सबब–कैसे पाए निजात?	श्रीमती कविता अगरवाल	6
भगवती भ्रामरी देवी व्रत	पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	7
स्त्री की कुण्डली में वैवाहिक सुख	सीता राम सिंह	8
डाउजिंग से सवालों के जवाब	मोनिका गुप्ता	9
चित्रों द्वारा करें वास्तु एवं ज्योतिषिय उपाय	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	9
देवों के देव सूर्य देव	पं. अजय दत्ता	10
जीवन में जन्म योग एवं कारण का प्रभाव	आचार्य डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा	11
हिन्दू और हिन्दू धर्म	कार्ष्णि रमाकान्त शर्मा	12
बच्चा अपनी माँ से ही संस्कार...	सुरेश अग्रवाल	12
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	13–14
चतुर्थ खण्डः सन्धि	विजय शर्मा	15
पूजा – सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN/2010/44791**

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

सूर्य की उपासना में जल (अर्घ्य) क्यों?

स्वस्थ रहने के लिए जितनी शुद्ध हवा आवश्यक है, उतना ही प्रकाश भी आवश्यक है। इसलिए कहा जाता है कि प्रकाश में मानव शरीर के कमजोर अंगो को पुनः सशक्त और सक्रिय बनाने की अद्भुत क्षमता है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर ही हमारे पूर्वजों ने सूर्य को अर्घ्य देने का विधान बनाकर इसे धार्मिक रुप दे दिया।

गायत्री मंत्र के साथ सूर्य को अर्घ्य देने के पीछे रहस्य यह है कि मंदेह नामक सुक्ष्म जीवाणुओं का नाश होता है।

मंदेह जीवाणु उन्हें कहते हैं, जो अंधकार और प्रकाश के मिलने से स्वयं पैदा हो जाते हैं एवं लोगों को हानि पहुंचाते है। इसलिए संध्या कर्म भी इसी संधिकाल में करने का विधान है। उल्लेखनीय है कि इसमें भगवान् सूर्य प्रसन्न होकर आयु, आरोग्य, धन, धान्य, क्षेत्र, पुत्र, मित्र, तेज, वीर्य, यश, कांति, विद्या, वैभव और सौभाग्य आदि प्रदान करते हैं। और सूर्यलोक की प्राप्ति होती है।

पीपल का पूजन क्यों?

गीता में भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं– **'अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्'** अर्थात् 'मैं सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष हूं।' इस कथन में उन्होने अपने आपको पीपल के वृक्ष के समान ही घोषित किया है।

पद्मपुराण के अनुसार पीपल का वृक्ष भगवान् विष्णु का रुप है। इसीलिए इसे धार्मिक क्षेत्र में श्रेष्ठ देव वृक्ष की पदवी मिली और इसका विधिवत् पूजन आरंभ हुआ। अनेक अवसरों पर पीपल की पूजा का विधान है। सोमवती अमावस्या के दिन पीपल के वृक्ष में साक्षात् भगवान् विष्णु एवं लक्ष्मी का वास होता है।

पुराणों में पीपल के वृक्ष में साक्षात् भगवान् विष्णु एवं लक्ष्मी का वास होता है एवं बड़ा महत्व भी बताया गया है–

मूल विष्णुः स्थितो नित्यं स्कन्धे केशव एवं च। नारायणस्तु शाखासु पत्रेषु भगवान् हरिः।।
फलेऽच्युतो न सन्देहः सर्वदेवै : समन्वितः।।
स एव विष्णुर्द्रुम एवं मूर्तो महात्मभिः सेवतिपुण्यमूलः। यस्याश्रयः पापसहस्त्रहन्ता भवेन्नृणां कामदुघो गुणाढ्यः।।

अर्थात 'पीपल की जड में विष्णु, तने में केशव, शाखाओं में नारायण, पत्तो में भगवान् हरि और फल में सब देवताओं से युक्त अच्युत सदा निवास करते हैं। यह वृक्ष मूर्तिमा श्रीविष्णुस्वरुप है। महात्मा पुरुष इस वृक्ष के पुण्यमय मूल की सेवा करते है। इसका गुणों से युक्त और कामनादायक आश्रय मनुष्यों के हजारों पापों का नाश करने वाला है।'

पद्मपुराण के मतानुसार पीपल को प्रणाम करने और उसकी परिक्रमा करने से आयुलंबी होती है। जो व्यक्ति इस वृक्ष को पानी देता है, वह सभी पापों से छुटकारा पाकर स्वर्ग को जाता है। पीपल में पितरों का वास माना गया हैं इसमें सब तीर्थो का निवास भी होता है। इसीलिए मुंडन आदि संस्कार पीपल के नीचे करवाने का प्रचलन है।

महिलाओं में यह विश्वास है कि पीपल की निरंतर पूजा अर्चना व परिक्रमा करके जल चढ़ाते से संतान की प्राप्ति होती है, पुत्र उत्पन्न होता है, पुण्य मिलता है, अदृश्य आत्माएं तृत्प होकर सहायक बन जाती हैं। कामनापूर्ति के लिए पीपल के तने पर सूत लपेटने की भी परंपरा हैं पीपल की जड़ में शनिवार को जल चढ़ाने और दीपक जलाने से अनेक प्रकार के कष्टों का निवारण होता है। शनि की जब साढेसाती दशा होती है, तो लोग पीपल के वृक्ष का पूजन और परिक्रमा करते है, क्योंकि भगवान कृष्ण के अनुसार शनि की छाया इस पर रहती है। इसकी छाया यज्ञ, हवन, पूजापाठ, पुराणकथा आदि के लिए श्रेष्ठ मानी गई है। पीपल के पत्तों से शुभकाम में वंदनवार भी बनाए जाते हैं। धार्मिक श्रद्धालु लोग इसे मंदिर परिसर में अवश्य लगाते हैं। सूर्योदय से पूर्व पीपल पर दरिद्रता का अधिकार होता है और सूर्योदय के बाद लक्ष्मी का अधिकार होता है। इसीलिए सूर्योदय से पहले इसकी पूजा करना निषेध किया गया है। इसके वृक्ष को काटना या नष्ट करना ब्रह्महत्या के तुल्य पाप माना गया है। रात में इस वृक्ष के नीचे सोना अशुभ माना जाता है। वैज्ञानिक दृष्टि से पीपल रात दिन निरंतर 24 घंटे आक्सीजन देने वाला एकमात्र अद्भुत वृक्ष है। इसके निकट रहने से प्राणशक्ति बढ़ती है। इसकी

छाया गर्मियों में ठंडी और सर्दियों में गर्म रहती है। इसके अलावा पीपल के पत्ते, फल आदि में औषधीय गुण रहने के कारण यह रोगनाशक भी होता है।

महेश पारासर

अमृत वचन

धर्म प्रवचन की वस्तु नहीं, आचरण की वस्तु है। जिसका आचरण धर्मयुक्त हैं वही धार्मिक है।

मोक्ष की भी चाह मत करों क्योंकि इसके बाद करने को कुछ बचेगा ही नहीं। यह जीवन की अन्तिम मृत्यु है। जीवन का सुदपयोग करना मोक्ष से भी उत्तम कर्म है।

पाठकों के पत्र

आदरणीय सम्पादक महोदय,

सादर नमस्कार।

मैं पिछल 5 वषों से आपकी पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। पत्रिका का प्रत्येक अंक ज्ञानवर्धक व संग्रहणीय होता है। आशा करता हूँ कि आप भविष्य में भी ऐसे ही तथ्यपूर्ण आलेख प्रकाशित करते रहेगें। श्री आर आर शर्मा–भोपाल

आदरणीय डा. पारासर जी,

सादर चरण स्पर्श ।

आपकी भविष्य निर्णय पत्रिका के अंको की साज सज्ज दिन प्रति दिन आकर्षक होती जा रही है। आपकी पत्रिका के सम्पादकीय भी बहुत ही रूचिपूर्ण व सारगर्भित होते है। पत्रिका का ऐसी ही स्तर बनायें रखें। मेरी शुभकामनाऐं सदैव आपके साथ है। अमित शर्मा–शमशाबाद

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न– मेरी नौकरी कब लगेगी। उपाय बतायें।

सुधीर पाठक–अलीगढ

उत्तर– आपकी सूर्य की महादशा चल रही है। आपकी कुण्डली में सूर्य उच्च का होकर दशम भाव में स्थित है। आपकी नौकरी अगस्त 2013 के बाद लगेगी। आप एक पुखराज रत्न धारण करें तथा शनि से सम्बन्धित दान करते रहें।

प्रश्न– मेरी आर्थिक व मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। तलाक हो चुका है। मेरे लिए उपाय बतायें।

पूनम शर्मा–मथुरा

उत्तर– आपकी कुण्डली में राहू की महादशा चल रही हैं। आप एक लहसुनिया रत्न धारण करें। शनि स्त्रोत्र का रोजाना तीन बार पाठ करें। राहू से सम्बन्धित दान करती रहें। मोती और पुखराज का लॉकेट गले में धारण करें। गुरूवार का व्रत रखें। खानपीन पर नियन्त्रण रखें। सूर्य को रोजाना जल अवश्य अर्पित करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– मेरे पुत्र के सिर मे हर समय दर्द रहता है। पिछले कुछ वर्ष से दर्द के साथ ही वह बेहोश हो जाता है। अपने पुत्र की कुण्ड़ली व घर का नक्शा प्रेषित कर रहा हूँ। यथासम्भव उपाय बतायें। श्याम सिंह–फिरोजाबाद

समाधान– आपके घर में उत्तर पूर्व ईशान कोण में शौचालय स्थित है। ईशान कोण में शौचालय होने से सन्तान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। यहॉ शौचालय स्थित होने से मानसिक तनाव तथा ब्रेन टयूमर के केस कई घरों मे पाये गये है। आपको सलाह दी जाती है कि यदि सम्भव हो तो यहाँ से शौचालय बदलाव लें। पुत्र को माणिक तथा मोती घारण करवायें। घर में वास्तु दोष निवारक यंत्र स्थापित करवायें। आपके तुरन्त लाभ मिलेगा।

समस्या– मेरा काम धंधा धीरे–धीरे कम होता जा रहा है आर्थिक संकट बढ़ते जा रहें हैं। काई भी कार्य सम्पन्न नहीं हो रहा उपाय बताकर अनुग्रहीत करें। आधार गुप्ता–आगरा।

समाधान– आपके घर में उत्तर की दीवार से सट कर सीढ़ियाँ बनी हुई हैं और फिर वह धूम कर ब्रह्म स्थल की ओर आ रही हैं ऐसी स्थिति आपको हमेशा कर्जदार बना कर रखेगीं और आर्थिक संकट सदैव बने रहेगें। यदि सम्भव हो तो आप घर की सीढियों को दक्षिण पश्चिम की ओर स्थानान्तरित करें। घर के ईशान कोण में मंदिर बनायें। प्रत्येक अमावस्या को घर बुलाकर ब्राह्मण को भोजन करवायें। राहू से सम्बन्धित दान करें। दिसम्बर 2013 के बाद समय परिवर्तन होगा।

पं. अजय दत्ता
मो. 9319221203

दैनिक जीवन को उपयोगी बनाने के सूत्र

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

कुछ ऐसे भी टोने–टोटके हैं जिन्हे प्रतिदिन करते रहने पर आपका हर प्रकार से भला होता है। आपको धन, वैभव, मान–सम्मान और सभी प्रकार के सुख तो मिलते ही हैं, आप अनेक व्यथाओं से भी स्वयं ही बचे रहते हैं। वैसे भी जब आप टोने–टोटकों, झाड़–फूंक और यंत्र–तंत्र के इस क्षेत्र में कदम रखते है, तब आपके द्वारा नित्य उपयोगी कुछ बातों को अपनाना और कुछ को छोड़ना एक प्रकार की मजबूरी बन जाती है। इस अध्याय में वर्णित कार्यो को नियमित रुप से एक बार करना प्रारंभ कर दीजिए, फिर तो ये आपकी आदत में ही शामिल हो जाएंगे, और इस प्रकार बिना किसी प्रकार के अतिरिक्त प्रयास के ही जीवन के सभी सुख और आनन्द अनायास प्राप्त करते रहेंगे।

प्रातःकाल उठकर सर्वप्रथम अपने दोनों हाथों की हथेलियां को कुछ क्षण देखकर उन्हें चूमें और अपने चेहरे पर तीन–चार बार फिराएं।

–नाक के छिद्रों में से एकाग्र होकर यह देखें कि उसका दायां स्वर चल रहा है अथवा बायां। जो भी स्वर चल रहा हो, सर्वप्रथम उस ओर के हाथ की उंगली से धरती का स्पर्श करके माथे से लगाऐं और उसके बाद पहले स्वर चलने वाला पैर ही पृथ्वी पर छुआएं।

–स्नान के पश्चात् भगवान सूर्य देव को 'ऊँ सूर्याय नमः' कहते हुए एक लोटा जल दें और उसके बाद ही पूजा– आराधना अथवा कोई साधना प्रारंभ करे।

–भगवान की भक्ति और पूजा नियमित रुप से कीजिए। भक्ति में बड़ी शक्ति है। आप टोन–टोटको और यंत्र–मंत्र के क्षेत्र में जो कुछ भी कर पाते है वह सब आपकी भक्ति और ईश्वर की कृपा का ही कमाल होता है।

–हनुमान चालीसा का नियमित पाठ और बन्दरों को चने, फल खिलाने से महावीर हनुमान आपके सभी कार्यो को सफल करते हैं। जहां हनुमानजी का वास है, वहां कोई जादू–टोना अथवा ऊपरी हवा अपना प्रभाव नहीं दिखला पाती है।

–घर के बनने वाले खाने में से पहली रोटी गाय के नाम से निकालें। उसे खिलाएं। यह संभव न हो तो उसके नाम से चिड़ियों को खिला दें। इसी प्रकार भोजन करते समय थोडा सा भोजन अलग प्लेट में निकालकर रख लें और उसे चिड़ियों को डाल दें।

–रात्रि का भोजन बनाते समय जो अन्तिम रोटी बने उसे कुत्ते को डाल दें। यह प्रयास किया करें कि आपके पैरों से चीटियां अथवा अन्य निरीह छोटे–छोटे कीट–पतंगे कुचले न जाएं।

–जहाँ तक संभव हो आटा शनिवार को पिसवाएं और गेहूओं में सौ–दो सौ ग्राम काले चले भी मिला लें।

–प्रात–काल सर्वप्रथम घर में झाडू लगाएं, परन्तु शाम होने के बाद भूलकर भी झाडू न लगाएं।

–संध्या होते ही घर में रोशनी अवश्य कर दें। अंधेरे घर में दरिद्रता और ऊपरी हवाएं प्रवेश कर सकती है।

–सूर्यदेव को प्रसन्न करने के लिए नियमित उन्हें लाल फूल, लाल चन्दन, गोरोचन, केसर, जावित्री, जौ अथवा तिल युक्त जल चढ़ाए।

–कार्यालय, दुकान आदि खोलने पर सर्वप्रथम अपने इष्टदेव को अवश्य याद किया करें।

–बड़ों को प्रसन्न करके उनका आशीर्वाद लिया करें।

–कभी कोई ऐसा कर्म न करें जिससे किसी की आत्मा अथवा शरीर को लेशमात्र भी कष्ट पहुँचे।

–बैक की किताब, चैक बुक अथवा अन्य धन संबंधी पेपर आप श्रीयंत्र अथवा कुबेर यंत्र के पास रखा करे। इसी प्रकार बैंक में पैसा जमा करते समय लक्ष्मी जी का कोई मंत्र मन ही मन जपते रहें।

–मुर्गे के पेट में यदा–कदा सफेद रंग की पथरी निकलती है, उसे साफ करके घर में रख लें। शुभ कार्य में जाते समय यह साथ रखें।

शेष पेज 18 **पर**.....

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property

Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja

भविष्य दर्शन®

Horoscope, Match Making & Varshphal

Dr. Rachna K Bhardwaj

Mon to Thu12 PM to 6 PM

Consultant of Astrology & Vastu

East of Kailash, New Delhi - Ph. **09717195756**

H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

सब पर राज करना चाहते हैं सिंह लग्न वाले

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

सिंह को राजसी राशि कहा जाता हैं। ग्रहों के राजा सूर्य इस लग्न वालों के स्वामी होते हैं। यह क्रूर एवं अग्नि तत्व का लग्न है। यह राशि मघा, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्रों के सभी चरणों व उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण से मिलकर बनती है। सिंह लग्न दिनबली है। सिंह लग्न वालों के लिए सूर्य, मंगल ओर गुरु नैसर्गिक मित्र होते है। बुध और चन्द्रमा सम होते हैं। शनि, शुक्र इन जातको के शत्रु होते हैं। यह राशि पूर्व दिशा को संचालित करती है।

स्वाभावतः यह स्थिर लग्न हैं तथा शीर्ष स्थान से इसका उदय होता है, इसलिए इसे शीर्षोदय राशि के अर्न्तगत रखा गया है। इस लग्न के लिए मंगल योगकारक ग्रह है। इस लग्न में कोई ग्रह उच्च या नीच का नही होता है। सिंह लग्न में जन्में जातक देखने में आकर्षण होते हैं। उनके कंधे चौडे आंखे सुन्दर व भाव प्रकट करने वाली होती है। यह लोग बहुत अधिक बातें अपनी आखों से ही प्रकट कर देते हैं। मुख पुष्ट व शरीर का ऊपरी हिस्सा पुष्ट व बली होता है। ऐसा जातक बहुत साहसी होता है।

जातक आनंदप्रिय होता है और सुखमय ही जीवन व्यतीत करना चाहता है। अगर कुंडली में सूर्य शुभ ग्रहों से दृष्ट और मजबूत हो तो सिंह लग्न वाले अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं, स्पष्टवादी होता है नीच कामों से घृणा करता है। इस लग्न का व्यक्ति सामने वाले से अपना उल्लू सीधा करने के लिए दिमाग का प्रयोग करते हुए भावनात्मक दबाब भी डालते हैं। लोगों के प्रति समानता का व्यवहार रखता है। धैर्यवान व उदार होता है वह जिस कार्य को अपने हाथ में ले लेना है उसे पूरे मन से निष्ठा के साथ पूरा करता है। ऐसा जातक एकाएक उत्तेजित नहीं होता बल्कि समझ से काम लेता है। उसमें आगे बढ़ने की बहुत इच्छा होती है। कला, संगीत, नाटक व सिनेमा में गहरी रुचि होती है। सिंह लग्न के लोग हर परिस्थिति में खुश रहते हैं इनमें दुख को भी सुख से गुजार देने की क्षमता होती है। ऐसे जातक सुख में भले ही न हँसे पर दुःख में अपने को सुखी दरसाने के लिए ज्यादा हंसते है। प्रेम के मामले में सिंह लग्न की जातिकाएं बहुत गम्भीर और विश्वनीय होती है। ऐसे लोग रुढिवादी और परम्पराओं में विश्वास रखने वाले होते हैं। जीवन के उत्तरार्ध में प्रायः असफल रहते हैं क्योंकि उनकी अपेक्षाएं और आशाएं अत्यधिक होती है, जिन्हें पाने के लिए वे लगातार संर्घष–शील रहते हैं पर उनकी इच्छाएं अधूरी ही रह जाती हैं। उनमें क्षमा कर देने की आदत होती है। यह जिस किसी से भी प्रसन्न हो जाएं तो उसके लिए पूरे मन से समर्पित रहते हैं। सिंह लग्न के व्यक्ति अपने अधिकारियों तथा बड़ों के द्वारा आमतौर पर गलत समझे जाते हैं और अधिकारीगण उनके बारे में गलत धारणा बना लेते हैं। उनके रहन–सहन में बड़प्पन प्रतीत होता है। वे मित्रता में विश्वनीय में अटल होते है दुःख व चिंता के समय में अपनी सूझ–बूझ–बुद्धिमता और दूरदर्शिता से काम लेते हैं इन लोगों में ईर्ष्या की भावना बहुत अधिक होती है। इसके अलावा लाभ के लिए गलत योजनाओं को बनाने में भी नहीं चूकते हैं। सिहं लग्न वालों का लोगों से अक्सर अहम टकराता है। सिंह राशि कालपुरुष की कुंडली के पांचवे भाव में पड़ती है। और पांचवा भाव संतान, जन्म जातज्ञान और बुद्धि का होता है। यदि इन जातकों की कुण्डली में सूर्य बलवान हो तो ऐसा जातक अति भाग्यवान होता है। ऐसे व्यक्ति को राज्य में अच्छा पद भी प्राप्त हो सकता है। भाग्य भाव का स्वामी और लग्नेश सूर्य का परममित्र होने के कारण इस लग्न वालों को मंगल बहुत अच्छे परिणाम देता है। सिंह लग्न वालो के स्वामी सूर्य इस लग्न के लिए शुभ फल देता है। इसलिए सूर्य लग्नेश होता है। सिंह लग्न के जातकों को रोज सुबह सूर्य को जल देना चाहिए। इस लग्न के जातकों को माणिक्य धारण करना चाहिये। भाग्य के स्वामी मंगल के लिए मूंगा पहनना चाहिए।

स्पष्ट वादी होते है और गलत कामों से घृणा करते हैं। यह अचानक उत्तेजित नहीं होते हैं बल्कि समझ से काम लेते है।

❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

पितृ ऋण बने जब परेशानी का सबब-कैसे पाए निजात?

डा. कविता अग्रवाल
ज्योतिष ऋषि, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता – अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान संघ
फ्रेंचाइजी – 'लाल किताब अमृत'
जी.डी. वशिष्ठ– 'बस अब दुख और नही'

अपने पूर्वजों के किये पापों का फल जब उसकी वंशावली में से किसी एक जातक को भोगना पडे, तो वह पितृ ऋण कहलाता है।

श्री कृष्ण ने गीता में कहा, **"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"।** अर्थात कर्म करते रहो फल पर तुम्हारा अधिकार नहीं।

हजारों सालों बाद इस प्रश्न का उत्तर लाल किताब के रचनाकार ने दिया, "इसलिये कि आप को जो फल मिलने वाला है वह केवल आपके कर्मो का ही फल होगा। आपको अपने पूर्वजों के कर्मो के फल भी भोगने है।"

पितृ ऋण की खास पहचान यह है कि इसके अनिष्ट घर–परिवार के सब लोगों को प्रभावित करते है। सब को नहीं तो अधिकांश को तो करते ही है। इसका अर्थ यह है कि पूर्वजों द्वारा किये गये कर्मो का शुभाशुभ जातक अथवा उसके संबंधियों को भोगना पड़ता है। इस रहस्यमयी ऋण का उपाय रक्त के सम्बन्धी ही कर सकते है। लाल किताब में पितृ ऋण के कई योग दिये गये है। जो केवल जन्मपत्री के आधार पर बनते है। जिनमें से कुछ प्रमुख है–

स्वऋण दोष– कारण– नास्तिकता के कारण जातक स्वयं पुरानी परम्पराओं तथा रीतियों को अंधविश्वास मानते तथा उनकी उपेक्षा करने की प्रवृत्ति रखता हो तो स्वऋण दोष होता है।

अनिष्ट फल–इस ऋण के प्रभाव से जातक को शारीरिक कष्ट मुकद्दमे में हार, राजदंड, प्रत्येक कार्य में संघर्ष, धन खर्च हो जाता है या खो जाता है या चोरी चला जाता है, मान–प्रतिष्ठा की हानि होती है। जातक निर्दोष होते हुऐ भी, दोषी बन जाता है।

उपाय– सूर्य का विधिपूर्वक यज्ञ करे परिवार में जहाँ तक रक्त का सम्बन्ध है, वहाँ तक सभी से बराबर–बराबर धन इकट्ठा करे तभी जातक को स्वऋण से मुक्ति मिलती है।

मातृ ऋण– कारण–माता का अपमान करना उसे यातनाएं देना घर से बेघर करना उपेक्षा करना आदि **अशुभ**–कर्मो के कारण यह ऋण होता है।

अनिष्ठ फल– इसके प्रभाव से जातक को व्यर्थ धन–हानि, रोग, ऋण प्रत्येक कार्य में असफलता प्राप्त होती है। शिक्षा में अवरोध, जातक की महसूस करने की शक्ति क्षीण हो जाती है।

उपाय–परिवार के प्रत्येक सदस्य से बराबर भाग चाँदी लेकर बहते पानी में एक ही दिन एक साथ बहाने से मातृ ऋण से मुक्ति मिलती है। प्रतिदिन बड़ो के चरण छूकर उनका आर्शीवाद प्राप्त करना भी लाभकर होता है।

स्त्रीऋण–कारण–प्रसब काल के समय स्त्री को किसी लालच के कारण मार डालना। पत्नी की हत्या या उसे अपमानित कर मार–पीट करने से यह ऋण होता है।

अनिष्ट–इस ऋण के प्रभाव से जातक को अनेक दुःखों का सामना करना पड़ता है। विशेष कर मंगल कार्यो में कोई अप्रिय घटना घटित हो जाती है। जातक का अगूँठा अकारण ही निष्क्रिय हो जाता हैं वह स्वपनदोष और चमड़ी के रोगों से पीड़ित हो जाता है।

उपाय–परिवार के सभी सदस्यों से बराबर मात्रा में धन एकत्रित करके एक दिन, एक ही समय पर सौ गायों को उत्तम भोजन (चारा–दाना आदि) खिलाने से स्त्री ऋण से मुक्ति मिलती है।

सगे–सम्बन्धी ऋण–कारण–किसी मित्र या सम्बन्धी को बिष देना, किसी की पकी फसल में आग लगा देना, भैंस को मार देना, किसी के मकान में आग लगा देना।

अनिष्ट–युवा होते ही जातक मान–सम्मान, प्रचुर धन संचित करता हैं। जो लोग उसके मार्ग में रोड़ा अटकाने का प्रयास करते है, वे स्वंय ही मिट जाते है लेकिन अचानक भारी हानि उठानी पड़ती है, उसका सर्वस्व स्वाहा हो जाता है। संतान नहीं होती अगर होती है तो अपाहिज होती है। शरीर में रक्त की कमी होती है। क्रोध अधिक आता है।

उपाय–परिवार के प्रत्येक सदस्यों से बराबर मात्रा में धन इकट्ठा करके गरीबों के इलाज के लिये किसी वैद्य चिकित्सक को दे दें।

बहन–बेटी का ऋण–कारण– लड़की या बहन पर अत्याचार करने उसे घर से निकालने अथवा किसी लड़की को धोखा देने या उसकी हत्या करने से यह ऋण होता है।

अनिष्ट– बहन–बेटी की शादी के समय एकाएक दुर्भाग्यपूर्ण घटनाऐं घटती हैं। जातक बुरी तरह बर्बाद हो जाता है। कभी–कभी संतान के समय भी दुर्भाग्य की मार पड़ती है। जातक के दाँत झड

शेष पेज 16 पर.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

भगवती भ्रामरी देवी व्रत

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

भगवती भ्रामरी देवी व्रत एक बड़ा ही दिव्य व शत्रुओं का पराभव करने वाला उत्कृष्ट व्रत है। इस व्रत को वर्ष में आने वाली चार नवरात्रियों में से किन्हीं भी नवरात्रियों में किया जा सकता है। इस व्रत में माँ दुर्गा की उपासना की तरह ही भगवती भ्रामरी देवी का स्थापन व षोडशोपचार पूजन किया जाता है। गणेश–गौरी–कलश व नवग्रहादि देवताओं का पूजन भी पूर्व में ही सम्पन्न करें। भगवती भ्रामरी देवी का यह स्वरुप अन्तर्जगत् (काम–क्रोध–मोहादि) एवं ब्राह्य जगत् के सम्पूर्ण शत्रुओं का दमन करने में पूर्णतया सक्षम है। भगवती का यह स्वरुप जीव के जीवन के चारों पुरुषार्थो (धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष) को प्राप्त कराने वाला हैं। सिंह वाहिनी माँ दुर्गा ने शत्रुओं का पराभव करने के लिए ही अपनी इच्छानुसार 'भ्रामरी' नाम से यह लीला विग्रह धारण किया है, जो जगत् कल्याणकारी है। जो प्राणी नव दिनों ते नियम–संयम से इस व्रत का भाव सहित पालन करता है वह निश्चय ही सुखी व समृद्धि से युक्त हो जाता है। इन नव दिनों में क्रमशः दुर्गाशप्तशती, देवी भागवत का पाठ तथा नर्वाण मंत्र या 'ह्रीं' मंत्र का श्रद्धानुसार जप व इसी मंत्र से यज्ञ भी करते रहें। यथानुसार एक वर्ष से ऊपर व नव वर्ष तक की कन्याओं को क्रमाानुसार प्रतिदिन मिष्ठान्ननादि भोजन कराते रहें। भ्रामरी देवी की लीला कथा का नित्य पठन व श्रवण करें। भ्रामरी देवी के प्राकट्य की कथा इस प्रकार हैः–

भगवती भ्रामरी देवी की लीला-कथा :- पूर्व समय की बात है, अरुण नाम का एक पराक्रमी दैत्य था। देवताओं से द्वेष रखने वाला वह दानव पाताल में रहता था। उसके मन में देवताओं को जीतने की इच्छा उत्पन्न हो गयी अतः वह हिमालय पर जाकर ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिये कठोर तप करने लगा। कठिन नियमों का पालन करते हुए उसे हजारों वर्ष व्यतीत हो गये। तपस्या के प्रभाव से उसके शरीर से प्रचण्ड अग्नि की ज्वालाएँ निकलने लगीं, जिससे देवलोक के देवता भी घबरा उठे। वे समझ ही न सके कि यह अकस्मात् क्या हो गया। सभी देवता ब्रह्मा जी के पास गये और सारा वृत्तान्त उन्हें निवेदित किया। देवताओं की बात सुनकर ब्रह्मा जी गायत्री देवी को साथ ले हंस पर बैठे और उस स्थान पर गये जहाँ दानव अरुण तप में स्थित था। उसकी गायत्री–उपासना बड़ी तीव्र थी। उसकी तपस्या से प्रसन्न हो ब्रह्मा जी ने वर माँगने के लिये कहा। देवी गायत्री तथा ब्रह्मा जी का आकशमण्डल में दर्शन करके दानव अरुण अत्यन्त प्रसन्न हो गया। वह वहीं भूमि पर गिरकर दण्डवत् प्रणाम करने लगा।

उसने अनेक प्रकार से स्तुति की और अमर होने का वर माँगा। परंतु ब्रह्मा जी ने कहा– **'वत्स! संसार में जन्म लेने वाला अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा, अतः तुम कोई दूसरा वर माँगो।'** तब अरुण बोला–प्रभो! यदि ऐसी बात है तो मुझे यह वर देने की कृपा करें कि–**'मैं न युद्ध में मरुँ, न किसी अस्त्र–शस्त्र से मरुँ, न किसी स्त्री या पुरुष से ही मेरी मृत्यु हो और दो पैर तथा चार पैरों वाला कोई भी प्राणी मुझे न मार सके। साथ ही मुझे ऐसा बल दीजिये कि मैं देवताओं पर विजय प्राप्त कर सकूँ।'**

'तथास्तु'-कहकर ब्रह्मा जी अन्तर्धान हो गये और इधर अरुण दानव विलक्षण वर प्राप्त कर उन्मत्त हो गया। उसने पाताल से सभी दानवों को बुलाकर विशाल सेना तैयार कर ली और स्वर्ग लोक पर चढ़ाई कर दी। वर के प्रभाव से देवता पराजित हो गये। देवलोक पर दानव अरुण का अधिकार हो गया। वह अपनी माया से अनेक प्रकार के रुप बना लेता था। उसने तपस्या के प्रभाव से इन्द्र, सूर्य, चन्द्रमा, यम, अग्नि आदि देवताओं का पृथक–पृथक् रुप बना लिया और सब पर शासन करने लगा।

देवता भागकर अशरणशरण आशुतोष भगवान् शंकर की शरण में गये और अपना कष्ट उन्हें निवेदित कियां उस समय भगवान् शंकर बड़े विचार में पड़ गये। वे सोचने लगे कि ब्रह्मा जी के द्वारा प्राप्त विचित्र वरदान से यह दानव अजेय–सा हो गया है, यह न तो युद्ध में मर सकता है न किसी अस्त्र–शस्त्र से, न तो इसे कोई दो पैर वाला मार सकता है न कोई चार पैर वाला, यह न स्त्री से मर सकता है और न किसी पुरुष से। वे बड़ी चिन्ता में पड़ गये और उसके वध का उपाय सोचने लगे।

उसी समय आकाशवाणी हुई–'देवताओं! तुम लोग भगवती भुवनेश्वरी की उपासना करो, वे ही तुम लोगों का कार्य करने में समर्थ हैं। यदि दानवराज अरुण नित्य की गायत्री–उपासना तथा गायत्री–जप से विरत हो जाय तो शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो जायगी।

आकाशवाणी सुनकर देवता आश्वस्त हो गये। उन्होंने देवगुरु बृहस्पति को अरुण के पास भेजा ताकि वे उसकी बुद्धि को मोहित कर सकें। बृहस्पति जी के जाने के बाद देवता भगवती भुवनरेश्वरी की आराधना करने लगे।

इधर भगवती भुवनेश्वरी की प्रेरणा तथा बृहस्पति जी के उद्योग से अरुण ने गायत्री–जप करना छोड दिया। गायत्री–जप के परित्याग करते ही उसका शरीर निस्तेज हो गया। अपना कार्य सफल हुआ जान बृहस्पति अमरावती लौट आये और इन्द्रादि देवताओं को सारा समाचार बताया। पुनः सभी देवताओं देवी की स्तुति करने लगे।

उनकी आराधना से आदि शक्ति जगन्माता प्रसन्न हो गयीं और विलक्षण लीला–विग्रह धारण कर देवताओं के समक्ष प्रकट हो

शेष पेज 18 पर.....

स्त्री की कुण्डली में वैवाहिक सुख

ज्योतिर्विद सीता राम
सिंह एम.ए.एल.एल.एम.

यद्यपि फलित ज्योतिष के सिद्धांत स्त्री पुरुष दोनों पर समान रुप से प्रभावी होते है, किन्तु व्यवहारिक दृष्टि से शारीरिक भावनात्मक और सामाजिक अन्तर को दृष्टि में रखते हुए हमारे दिव्यदर्शी मनीषियों ने कुछ सिद्धांत विशेष रुप से स्त्रियों के लिये प्रतिपाहित किये हैं जिनका अनुसरण कर वह अपने दाम्पत्य जीवन का सटीक पूर्वानुमान कर सकती है।

आजकल केवल गुण–मिलान के आधार पर ही अधिकार विवाह सम्पन्न किये जाते है जो सही नहीं होता। इसके फलस्वरुप नवदम्पत्ति को वैवाहिक जीवन में कठिनाईयाँ आती हैं और निरन्तर तलाक की संख्या बड़ रही है। अतः वर–वधू की जन्म–पत्रिकाओं का पूर्ण आँकलन के बाद ही विवाह का निर्णय लेना चाहिए जिससे उनका दाम्पत्य जीवन मधुर रहे।

कुण्डली के बारह भावों में प्रथम भाव स्वयं को और सातवाँ भाव भावी पति और वैवाहिक सुख को दर्शाता है। प्रथम एवं सप्तम भाव में यदि पापी ग्रह–शनि, मंगल, राहु, केतु व सूर्य हों तो दाम्पत्य सुख में अवरोध आते है, वहीं शुभ ग्रह–गुरु, शुक्र, बुध, व बली चन्द्र–दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाते हैं। शुक्र वैवाहिक सुखका कारक, तथा गुरु पति का कारक ग्रह है।

जन्म कुण्डली में लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश भाव में मंगल हो तो मंगल दोष का निर्माण होता है जो वैवाहिक जीवन पर दुष्प्रभावी होता है। विश्व के 50 प्रतिशत व्यक्तियों की कुण्डली में मंगल दोष पाया जाता है। वर–वधू दौनों की कुण्डली में मंगल दोष होने पर वह निष्प्रभावी हो जाता है। अतः कुण्डली मिलान के समय मंगल–दोष के निराकरण का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

अन्य प्रमुख सूत्र इस प्रकार हैः– लग्न में गुरु, शुक्र व बुध स्थित हो तो वह स्त्री सुन्दर, सुखी, विद्वान और धार्मिक होती है। लग्न या चन्द्रमा से सप्तम भाव में शुभ ग्रह स्थित हों, अथवा सप्तमेश सप्तम भाव में स्थित हो तो विवाह सम्बन्धी अशुभ योग समाप्त हो जाते हैं। लग्न में बुध व शुक्र की स्थिति उसे कलाकार बनाती है। चन्द्र व बुध लग्न में मित्र राशि, स्वराशि या उच्च राशि में हो तो वह सुन्दर, चतुर, गुणी सुखी और आध्यात्मिक ज्ञान वाली होती है।

चतुर्थ भाव में शुभ ग्रह स्त्री को सच्चरित, सुखी और धन–धान्य पूर्ण बनाता है। पापी ग्रह दुखी व दुशचरित्र बनाता है। पंचम भाव में गुरु, शुक्र, बुध व चन्द्रमा की युति या दृष्टि हो तो उसकी संतान गुणी, भाग्य शाली और माता–पिता की भक्त होती है।

पंचम या दशम भाव में स्थित शनि, अथवा तृतीय व एकादश में राहु या केतु हो, तब उनकी सप्तम भाव पर अशुभ दृष्टि दाम्पत्य सुख को नष्ट करती हैं।

सप्तम भाव में शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध व चन्द्र) की युति अथवा दृष्टि स्त्री को सच्चरित, अपने पति की प्रिय तथा सबकी स्नेही बनाती है। सप्तम में शनि निर्बल होने पर पति सुन्दर नहीं होता या अधिक उम्र का होता है, और स्त्री का विवाह बिलम्ब से होता है। सप्तम में मंगल उसस स्त्री के पति को कलह–प्रिय तथा निर्धन बनाता है तथा उसके अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध होते हैं। सप्तम भाव में सूर्य हो तो उसे पति त्याग देता हैं। सप्तम में राहु–केतु वैवाहिक सुख में कमी करता है।

पाप ग्रह का किसी पाप ग्रह की राशि में, अष्टम भाव मे स्थिति वैधव्य योग बनाती है। परन्तु अष्टम भाव में उच्च राशि या स्वराशि का पाप ग्रह हो तो शुभ फल देता है। अष्टम भाव में क्षीण चन्द्रमा वैधव्य योग की रचना करता है। अष्टम भाव में शुभ ग्रह की स्थिति होने पर पत्नी की पति से मृत्यु होती है। अष्टम भाव में शुभ एवं पाप ग्रह दौनों हों तो दम्पत्ति की मृत्यु साथ–साथ या थोडे अन्तराल में होती है। अष्टम का राहु दाम्पत्य सुख के अतिरिकत मायके और ससुराल दोनों परिवारों को हानि पहुँचाता है।

जिस स्त्री की कुण्डली के नवम भाव में बुध, शुक्र हो तब, सप्तम व अष्टम भाव में पाप ग्रह होने पर भी वह पति और पुत्र के साथ दीर्घकाल तक सुखमय जीवन व्यतीत करती है।

यदि सप्तमेश त्रिक भाव (षष्ठ, अष्टम व द्वादश) में हो अथवा त्रिक भावेश सप्तम भाव में हो तो वैवाहिक सुख नहीं मिलता।

यदि कुण्डली के षष्ठ, सप्तम और अष्टम भाव में क्रमशः मंगल, राहु और शनि हो तो विवाहोपरान्त पति की मृत्यु निश्चित होती है।

अतः गुण मिलान के अतिरिक्त मंगल दोष साम्य, प्रथम, सप्तम, अष्टम व नवम भाव पति कारक गुरु, तथा वैवाहिक सुखकारक शुक्र के बल, और अशुभ प्रभाव में होने का आँकलन करने के बाद किया विवाह ही वैवाहिक सुख देता है। ❋❋❋

वास्तुदोष, आर्थिक, व्यापारिक, मानसिक, शारीरिक, शिक्षा, दुर्घटना, जायदाद, वैवाहिक, घरेलू समस्याओं का यंत्र/मंत्र/रत्न द्वारा समाधान हेतु मिलें

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

डॉ. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय,
वास्तुशास्त्राचार्य

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

चित्रों द्वारा करें वास्तु एवं ज्योतिषिय उपाय

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

किसी भी घर ऑफिस की प्रगति के लिए उसका वास्तु सम्मत होना आवश्यक है। अक्सर घरों में अनेक प्रकार के वास्तु दोष पाये जाते है। हर बार घर की तोड़फोड संभव नहीं हो पाती है। इसके लिए हम विभिन्न प्रकार के वास्तु उपाय करते है। जिनमें भिन्न–भिन्न वस्तुओं का प्रयोग होता है। इन साधनों में चित्रों का भी एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। चित्रों के माध्यम से हम कई प्रकार के वास्तु दोषों का काफी हद तक निवारण कर सकते है। रेमेडियल वास्तु में चित्रों का काफी महत्व है।

इसके पीछे सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि हम एक लम्बे समय तक जब किसी भी वास्तु को देखते है तब वह हमारे ऊपर असर डालती हैं एवं वह वास्तु वैसा ही फल हमें देने लगती है। चित्रों से हम निम्न प्रकार से शुभ फल प्राप्त कर सकते है। चित्रों की तरंगों का प्रभाव शरीर पर पड़ता है। घर के ईशान कोण में दोष होने पर जल का चित्र लगायें इसके अतिरिक्त शिव जी (जल में से गंगा बहती हुई) का चित्र लगाएं।

–उत्तर दिशा में दोष होने पर मनी प्लांट या नदी का चित्र जिसमें हरे–भरे पेड़ हो।

–अग्नि कोण में दोष होने पर उगते हुए सूर्य का चित्र लगाऐं।

–घर के नैऋत्य कोण के हल्के होने पर ऊँचे पहाड़ों के चित्र लगायें।

–पश्चिम दिशा में दोष होने पर ऊँची इमारतों के चित्र लगाएं।

–जिस घर में सास–बहू एवं देवरानी जेठ जिनके मध्य तनाव हो तो उन दोनों का मुस्कराता हुए चित्र किचिन एवं घर की लंबी की पश्चिमी दीवार पर लगाएं जहाँ बाहर से हर वक्त दृष्टि पड़ती हो।

–पति–पत्नि के मध्य संबंध मधुर रहे इसके लिए उनके शयनकक्ष में पति–पत्नि का मुस्काराता हुआ चित्र लगायें परन्तु यह ध्यान रहे कि उस चित्र मे कोई तीसरा व्यक्ति न हो।

–बच्चों के कमरे में उनके पैदा होने से लेकर बड़े होने तक चित्र क्रमबार लगाऐं यह उनकी विकास में सहायक रहेगा।

–जिस घर में कन्याओं के विवाह में देरी हो रही हो ऐसे में कन्याऐं पीले वस्तुओं में चित्र खिंचवाकर गुरुवार के दिन भगवान के या अपने गुरु के चरणों में रखें इससे विवाह शीघ्र हो जायेगा।

–लडके के विवाह हेतु वह सफेद–रंग के वस्त्रों में चित्र खिंचवाकर मंदिर में रख दे इससे उन्हें मनचाही वधू प्राप्त होगी।

–यदि विदेश जाने में रुकावट आ रही हो तो सफेद वस्त्र धारण कर नीली या काली बैक ग्राउंड में चित्र खिंचवाकर शनिवार के दिन पश्चिम दिशामें किसी लोहे की भारी चीज से दबा दे तो विदेश जाने की संभावना बढ जाऐगी।

–जिस घर में धन की समस्या हो वह माँ लक्ष्मी का गुलाबी वस्त्रों मे चित्र एवं हाथों में धन गिरता हुआ एवं कलश में भरे हुए धन का चित्र लगाऐं।

–मुकदमें में विजय प्राप्ति के लिए लाल वस्त्रों में फोटो खिंचवाकर मंगलवार के दिन हनुमान जी की मूर्ति के नीचे दबायें। मुकदमें में आशातीत सफलता प्राप्त होगी।

–यदि स्वास्थ्य खराब रहता है तो पीपल बरगद एवं कछुऐं के चित्र लगायें।

–नौकरी प्राप्त करने के लिए हल्के नीले वस्त्रों में फोटो खिंचवाकर एवं बैंकग्राउंड भी नीला हो। इस चित्र को बार–बार देखें इससे नौकरी पाने में सहायता होगी।

–संतान प्राप्ति हेतू पीले रंग के वस्त्रों में चित्र खिचाऐं एवं बैंकग्राउंड भी पीला हो परन्तु ध्यान रहे कि चित्र अकेला हो एवं पीले के अतिरिक्त कोई रंग न हो।

विशेष– चित्रों की तंरगों का प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है।

❋❋❋

डाउजिंग से सवालों के जवाब

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, वास्तु शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर,

शुभाशुभ फल कथन विधि 'डाउजिंग इन दिनों सबसे अधिक लोकप्रिय हो रही हैं। इस विधि से आप अपने सवाल का जवाब हां या ना में पा सकतें है। आपको शायद याद होगा कि हमारे ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी ऐसे लोग मौजूद है जो जमीन में पानी कहाँ हैं? ये बताते है। जिन्हें खोजा कहतें हैं। लगभग उसी जैसे सिद्धांत या पद्धति पर डाउजिंग फल कथन की विद्या काम करती है। डाउजिंग विद्या में जो उपकरण प्रयोग में लिखा जाता हैं, वह 'पेंडुलम' कहलाता है। पेंडुलम किसी पक्के धागे या चैन से बंधा शंकुनमा आकृति होती है। इससे फल कथन के लिए पेंडुलम का धागा/चैन को अंगूठे एंव तर्जनी उंगली की सहायता से पकड़कर स्थिर रखा जाता हैं। प्रश्न का उत्तर जानने के लिए पेंडुलम से कहा जाता है– 'यदि प्रश्न का उत्तर हां में है तो वह वृत्ताकार घूमें और ना में है तो आगे या पीछे अथवा दाएं–वाएं घूमे। पेंडुलम को घूमने की स्थिति के अनुसार प्रश्न का उत्तर हां या ना में होता हैं।

इस विद्या का संम्बन्ध एकाग्रता एंव अचेतना मस्तिष्क से माना जाता है। इस दृश्य जगत से हमारे चेतन मस्तिक का संम्बन्ध होता है। तथा अदृश्य जगत से अचेतन से मस्तिष्क का जिस प्रकार एक व्यक्ति किसी समस्या से छुटकारा पाने के लिए उसके उपाय पर विचार करता हुआ सो जाता है और प्रातः उठने पर उसे समस्या का उपाय मिल जाता है। उसी प्रकार एकाग्रता पूर्वक 'डाउजिंग' करने से अचेतन मस्तिष्क उस प्रश्न का उत्तर पेंडुलम की सहायता से दे देता हैं। इस विधि से आप ऐसे प्रश्नों का उत्तर जान सकते है– जैसे अमुक व्यक्ति की खोई वस्तु मिलेगी या नही? अमुक कार्य में सफलता प्राप्त होगी या नहीं? मुकाबले में हार होगी या जीत? इसके अलावा वस्तु देखने के लिए कि कोई भी जगह सकारत्मक है या नकारात्मक? ऊर्जा देखने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता हैं। नक्शे पर भी डाउजिंग का प्रयोग किया जाता। इस प्रकार पेंडुलम की गति का उत्तर प्राप्त किया जाता हैं। ❋❋❋

देवों के देव सूर्य देव

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

सूर्य देव शक्ति सम्मान से संपत्ति के दाता है। बुद्धि, बल, पौरुष के विधाता है। सृष्टि की जान (प्राण) है। भक्तों के भगवान है। नवग्रहों में प्रमुख ग्रह नित्य दर्शित भगवान सूर्य है। समस्त ग्रह स्थिर सूर्यदेव की परिक्रमा करते रहते हैं। जिसके फलस्वरुप दिन–रात निर्मित होते सूर्यदेव को अंग्रजी में SUN, अरबी भाषा में शम्स, उर्दू में आफताब व फारसी में खुर्शेद कहते है। पृथ्वी और स्वर्ग के मध्य ब्रह्माण्ड केन्द्र में सूर्य स्थिर, सूर्य देव को ही अधार मानकर दिशा, आकाश अंतरिक्ष भूलोक, स्वर्ग–नरक व रसातल को प्रकाश वर्ष द्वारा मापा और जाना जाता है।

अदीति पुत्र सूर्य को कालपुरुष की आत्मा और सृष्टि का पोषक माना गया है। कालपुरुष के सिर–मुख पर सूर्य का प्रभाव है। श्री सूर्यदेव का चरित्र वितरण प्रभाव है।

पत्रिका में सूर्य मेष के उच्च के तथा तुला के नीच के होते है। सूर्य की दशाफल से विदेशगमन होता है।

जन्मांक के लग्न भाव नवम, भाव दशम, भाव में सूर्य भाव कारक ग्रह है। अंकशास्त्र के अनुसार सूर्य का अंक 1 है।

पिता–ऋषि कश्यप, माता– आदिती, पत्नी–संज्ञा, छाया, कुन्ति, पुत्र–शनिराज, कर्ण, स्वरुप–दैदिप्यमान, आकृति–वृताकार, स्वभाव–स्थिर, पद–ग्रहराज, धातु–स्वर्ण–ताम्र, रत्न–माणिक, वाहन–सप्ताश्वस्थ, दान पदार्थ– माणिक–गेहूं, प्रिय वस्तुएं–कृषय वस्त्र, गुण, स्वर्ण ताम्र, लाल पुष्प, रक्त चंदन, कमल, पुष्प, रक्त वस्त्र, केसर, मूंगा, लाल गाय।

दान का समय– सूर्योदय प्रातःकाल रविवार
दिशा– पूर्व **दिप्तांश–** 15 अंश
भाग्योदय काल– 22 से 24 वर्ष की आयु में
स्थान– गोशाला, देवभूमि

सूर्य के 12 नाम :– 1 मरीचि, 2. भानु 3. भास्कर 4. सविता 5. सूर्य 6. अर्क 7. खग 8. कलिकर पूषा 9. रवि 10. आदित्य 11. गुण पुरुण, 12. हिरण्यगर्भाय

भगवान सूर्य की रुचि के पदार्थ– शल्य चिकित्सा अर्थात चिकित्सक, सैनिक, नाटकर, औषधि निर्माता–विक्रेता, स्वर्णकार आदि समस्त जातकों को भगवान सूर्य की उपासना से विशेष लाभ की प्राप्ति होती है।

वैदिक मंत्र

ऊँ आकृष्णेन रजसार्वतमाना निवेशयन्नमतं मर्त्यच्च।
हिरण्ययेन सविता रथेनदेवा। याति भुवनामि पश्यन्।।

जप संख्या – 7000 (सात हजार)
तंत्र मंत्र– ऊँ घृणिःसूर्याय नमः
सूर्य गायत्री मंत्र– आदित्य विद्यमहे, प्रभाकारय धिमहि।
तन्नो सूर्य प्रचोदयात्।।

बीज मंत्र– ऊँ ह्रां ह्रीं हौ सः सूर्याय नम
उपासना– विष्णु जी की करें रविवार के दिन प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक।

जन्मपत्री में सूर्य ग्रह से निम्न विचार–सरकारी हिसाब किताब, शिक्षा, डॉक्टर, वैध, दवाखाना, सोना–मोती, घी, चीनी, ऊन, गुड़, घास, लकड़ी, अनाज, मुकद्दमा लड़ने में अभिरुचि, आत्मा स्वास्थ्य संतान धन, शक्ति, पिता, आत्म सिद्धि, जंगल, भ्रमण, रेगिस्तान का रहना।

बीमारी–ज्वर, नेत्र विकार, सिर, दर्द हृदय रोग, अनिद्रा, बेचैनी, प्यास लगना, सुखापन, मेरुदण्ड, स्नायु, अनपच, क्षय, अतिसार, मंदाग्नि, मानसिक रोग, उदासीनता, राजदरबार से मान–अपमान, शिक्षा, खेद, अपमान, कलह, दिमाग, मस्तिष्क, सिर, ऊपर जबड़ा, मस्तिष्क संरचना, मुखाकार, पिट्यूटरी ग्लैण्ड, आत्मबल, मस्तिष्क रोग, स्मरण शक्ति, नेत्र रोग उन्माद, मुँहासे, मिर्गी, रक्तघात, रक्त विकार, टायफायड, पित्त की गर्मी, प्रथम भाव इस भाव के कारक ग्रह सूर्य है।

सूर्य की दशा में विदेश गमन, राजा से धन लाभ, व्यापार ख्याति नेत्र रोग, नाना प्रकार के हृदय रोग, पत्रिका में सूर्य को अनुकूल–प्रतिकूल के आधार पर देखा जाता है।

सूर्य रत्न– माणिक **उत्तमोतम श्रेणी–** 2–4
उत्तम श्रेणी– 4–8 **मध्यम श्रेणी–** 8–12
अनामिका अंगुली में ताँबा या सोना में दिन रविवार।

नक्षत्र– कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ में

सूर्यग्रही जड़ी बुटियों से उपचार–विल्व वृक्ष की जड़ रविवार को सूर्योदय के समय सफेद या गुलाबी वस्त्र में बांधकर दाहिनें हाथ में धारण करें।

सूर्य ग्रह के समिधा– मदार (अक/आक)
जपार्थ मंत्र– ऊँ ह्रां ह्रीं हौं सः सूर्याय नमः
जप संख्या:– 700*4 (चार गुणा कलियुग में)

जन्म पत्रिका में– यदि भाव का स्वामी पूर्ण रुप से बली है तो साधारणतः उस भाव का उत्तम प्रभाव होगा।

यदि लग्नेश अच्छी स्थिति में हो तो यह अपने आप में एक परिसम्पत्ति है जो उस व्यक्ति को आजीवन सुख देती है। इसके साथ ही यदि दशम भाव में कोई ग्रह हो तो वह इसमें चार चाँद लगा देता है।

लग्न भाव का विश्लेषण करते समय चन्द्र लग्न और नवांश लग्न की स्थिति पर भी ध्यान देना चाहिए। नवम् और दशम भाव के अधिपति की युक्ति से प्रबल राजयोग बनता है।

मेष राशि में उत्पन्न व्यक्ति के लिए सूर्य उत्तम है। यदि सूर्य लग्न में हो और उस पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक को दमा या फेफडे की बीमारी होती है। ❋❋❋

जीवन में जन्म योग एवं कारण का प्रभाव

आचार्य डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा 'मयंक'
धीएस्ट्रोलॉलीकल ब्यूरो श्री जगदम्बा कॉलोनी
ठाकुर बाबा रोड डबरा-475110 जिला- ग्वालियर (म.प्र.)
दू. भा. 07524-225472, मो. 09977522168

जन्म कुंडली के आधार पर फल कथन करते समय लग्नों, ग्रहों, नक्षत्रों, विभिन्न वर्गो, विभिन्न दशाओं आदि की शुभा शुभ स्थिति पर विचार किया जाता है। प्रायः ज्योतिर्विद जन्म के समय स्थित पर विचार किया जाता है। प्रायः ज्योतिर्विद जन्म के समय स्थित योग एवं कारण के प्रभाव की अनदेखी कर देते है। इन्हें भी विचार में अवश्य लेना चाहिये। ये भी जातक के जीवन पर अपना-अपना प्रभाव डालते हैं। प्रस्तुत लेख में इन प्रभावों को प्रस्तुत किया गया है।

योगों की संख्या 27 है। ये सभी पंचागों में दिये रहते हैं। जब सूर्य और चंद्रमा की गति में 13 अंश 20 कला का अंतर आता है। तब एक योग का समय बनता है। तिथि के आधे भाग को कारण संज्ञा दी गई है। सूर्य चंद्रमा के बीच में 6 अंश का अंतर आने पर एक कारण होता है। इनकी संख्या 11 है। इनमें से 7 चल तथा 4 स्थिर करण है।

1. **योग-** विष्कुंभ, प्रीति, आयुष्मान, सौभाग्य शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतिपात, वरियान, परिध, शिव, सिद्धि, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्म, ऐन्द्र, वैधृति।

2. **करण-** बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि (भद्रा) चल संज्ञक करण है। शकुनि, चतुष्पद, नाग, किंस्तघ्न स्थिर करण हैं।

जन्म योग प्रभाव

विष्कुंभ- इस योग में जन्म लेने वाला जातक भाग्य शाली, सुदंर रुपवाला, सभी आभूषणों से युक्त चतुर एवं विद्वान होता है।

प्रतियोग- इसमें जन्मा व्यक्ति जीवन में स्त्रियों का प्रिय उत्साही, तत्व ज्ञानी, स्वार्थी एवं उद्यमी रहता है।

आयुष्मान-इस योग में जन्मा जातक अभिमानी, धनी, कवि, दीर्घायु, भक्ति वाला तथा उपराजय होता है।

सौभाग्य- योग में जन्मा व्यक्ति राज्यमन्त्री, सभी कामों में निपुण तथा नारियों को प्यारा होता है।

शोभन- योग में जन्म लेने वाला सुंदर, पुत्रों से युक्त, पत्नी से पूर्ण सुखी, अपने कामों में कुशल तथा पराक्रमी रहता है।

अतिगण्ड- योग में जन्म लेने वाला जातक अपने ही कुल की तथा माता की हानि करने वाला होता है।

सुकर्मा- इस योग में उत्पन्न जातक सत्कर्म युक्त प्रेमी सुशील, भोगी एवं गुणी होता है।

धृति- इस योग में जन्म लेने वाला जातक धैर्य युक्त, यश युक्त स्वस्थ, धनी, भाग्यशाली, सुंदर, गुणी एवं विद्वान होता है।

शूल योग- में जन्मा व्यक्ति शास्त्रज्ञ, धर्माता, विद्वान, धनी एवं यज्ञों का कर्ता होता है।

गण्ड- इस योग में जन्म लेने वाला बडे सिर वाला, छोटे कद का मोटा, भोगी गण्ड रोग एवं क्लेश से दुखी होता है। लेकिन दृढ प्रतिज्ञ होता है।

वृद्धि-इस में जन्मा जातक स्त्रीवान, पुत्रवान, दीर्घायु धनी, भोगी एवं बलशाली होता है।

ध्रुव-जातक दीर्घायु प्रियदर्शी, स्थिर कर्म करने वाला, एवं स्थिर मति वाला होता है।

व्याघात- योग में जन्मा जातक सर्वज्ञ, सर्पपूजित, सभी प्रकार के कार्य करने वाला एवं प्रसिद्ध होता है।

हर्षण- हर्षण जायते लोके महा भोगी नृपप्रियः।
हृष्ट सदा धर्नयुक्तो वेद शास्त्र विशारदः।।

जातक भोगी, राजप्रिय, प्रसन्नमुख, धनी एवं वेदशास्त्रों में निपुण होता है।

वज्र- इस योग में जन्मा व्यक्ति कठोर मुट्ठी वाला, सभी विद्याओं में पारंगत, धन धान्य युक्त एवं बलवान होता है।

सिद्धि- सिद्धियों में जन्मा जातक अपने जीवन में सिद्धियों से युक्त, दानी, भोगी, सुखी, सौदर्यवान, शोक एवं रोग ग्रस्त रहता है।

व्यतीपात योग- व्यतीपाते नरो जातो महाकष्टेन जीवित। जीवेच्चेद्भाग्य योगेन स भेवदुत्तमोनृणाम्।। इस योग में उत्पन्न जातक कष्ट से जीवित रहता है। भाग्यवश जीवित रहे तो मनुष्यों

शेष पेज 19 पर.....

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़,
आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

हिन्दू और हिन्दू धर्म

कार्ष्णि रमाकान्त शर्मा
आगरा।

विश्व में अनेकानेक धर्म हैं। इससें से मुख्य धर्म हैं बौद्ध धर्म, इसाई धर्म, इस्लाम धर्म, हिन्दू धर्म, सिक्ख धर्म, जैन धर्म, बहाई ध र्म एंव पारसी धर्म (जरथुरस्ट्र) धर्म सभी धर्मों के धर्मशास्त्र एंव महापुरूषों की मान्यता हैं कि इस चराचर जगत एंव सृष्टि को एक अदृश्य महान शक्ति द्वारा चलाया जा रहा है। उसी महान शक्ति का सभी धर्मों ने अपने–अपने मतानुसार भिन्न–भिन्न नाम दिये है। हिन्दू धर्म में भगवान है, इसलाम धर्म में अल्लाह अन्य धर्मों में ध र्म के मुख्य संथापकों का ही (ईश्वर) के रूप में माना जाता है। बौद्व धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध, ईसाई धर्म के ईसामसीह, इस्लाम धर्म के मौहम्मद साहब, वहाई धर्म के बहाउल्लाह, पारसी धर्म के जरथुस्ट्र, सिक्ख धर्म के गुरूनानकदेव एंव जैन धर्म के प्रथम तीर्थथंकर ऋषिभ देव माने जाते हैं। सभी धर्म एंव धर्म गुरूओं का एक मात्र संदेश यही हैं कि प्रेम, त्याग एंव प्राणी मात्र की सेवा तथा सत्य बचन बौलना, इससे ही शान्ति, सुख की प्राप्ति होती है एवं महान सर्वशक्तिमान प्रभु से एकाकार होता है।

हिन्दू धर्म ही मात्र ऐसा धर्म हैं। जिसका कोई भी संस्थापक कहीं नही है। हिन्दू धर्म का मूल आधार वेद है। और इसके चार भाग है– (1) संहिता (2) ब्राहम्मण (3) आरण्यक और (4) उपनिषद। हिन्दू धर्म की मूल प्रेरणा हैं। सत्य, प्रेम और करूणा।

हिन्दू जो, सनातनी है। जो उस धर्म का पालन करता है, जिस पर अनेक संस्कार हुए है, जो श्रुति, समृति, पुराणों को क्रम से आप्तवाक्य मानता है, तथा भक्ति एंव श्रद्धा से अपने–अपने कर्मो में लगा रहता है। तथा शास्त्रों में बताये गये आचार का सदा पालन करता है।

हिन्दू धर्म की स्थापना किसी एक व्यक्ति ने नहीं की है, इसलिए इस धर्म में अनेक तरह–तरह के दर्शन है। और तरह–तरह की उपासनाएँ है। इससे किसी का किसी से विरोध नही हैं। इसमें निर्गुण और निराकार की उपासना है, सगुण और साकार की भी है।

शेष पेज 17 पर.....

बच्चा अपनी माँ से ही संस्कार पाता है।

सुरेश अग्रवाल
आगरा

जीवन को भार नहीं– आभार समझें। यह ईश्वरीय प्रदत्त अनमोल वस्तु है। जीवन की सार्थकता के लिये आवश्यक है। कि वह सुनियोजित एंव संस्कारित हो। व्यक्ति पुरूषार्थ का प्रकाश कभी मन्द न हो और उसकी सोचने और समझने की क्षमता में उत्तरोत्तर वृद्धि हो। उम्र की कच्ची डाली पर खिला हुआ फूल अगर मुरझा जाता है, तो दोष उस पौधे का है, जो उसे उचित पोषण और संरक्षण नही दें सका। इसी प्रकार जब तक मनुष्य की चिन्तन शक्ति, सृजन की क्षमता और हिताहित समझने का ज्ञान दबा रहता है। तब तक उसके संस्कार निर्माण में प्रकृति, वातावरण, साहित्य, सम्पर्क और परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इन सबसे भी बड़ा एक स्त्रोत है। जो जीवन की दिशा को बदलने में सक्षम है। वह है माँ। एक बच्चे के लिए माँ सब कुछ होती है। यानी जननी, शिक्षक, देवता, गुरू और भगवान भी। बच्चा अपनी माँ से केवल माता ही नहीं पाता, अच्छे–बुरे सारे संस्कार भी पाता है। ये संस्कार उसे जन्म के बाद नही, गर्भावस्था में ही मिलने शुरू हो जाते हैं। शास्त्रों के अनुसार यदि माँ, अपनी संतति को संस्कारित बनाने के लिए संयत जीवन जीए, तो उसे सहज रूप में ही ईमानदार माँ योग्य शिक्षिका और संस्कार प्रदाता की भूमिका मिल सकती है।

बच्चे को सदुसंस्कारों से अनुप्राणित करने के लिए यह आवश्यक है। कि वह गर्भावस्था में त्रिगुप्ति (मन गुप्ति, वचन गुप्ति और काय गुप्ति) की साधना करे। मन गुप्ति में मन को स्वस्थ और प्रसन्न रखें, आर्त्त ध्यान न करें, उत्तेजना न करे, किसी का अनिष्ट चिन्तन न करें, प्रत्येक परिस्थितियों में सम रहे व सहिष्णु बने। वचन गुप्ति में गर्भवती स्त्री मौन का अभ्यास करें, व्यर्थ न बोले, सदैव मधुर एंव सत्य बोले, कटुशब्द या अपशब्द न कहे, वाचलता और अट्टहास का त्याग करे, किसी की निन्दा न करे और किसी पर झूठे आक्षेय न लगाय। कायगुप्ति में गर्भवती स्त्री अल्हड़ता से न चले, निरूद्वेश्य

शेष पेज 19 पर.....

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

16 दिसम्बर - 15 जनवरी

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ–इस माह में स्वास्थ्य उत्तम होने की संभावना रहेगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। व्यवसाय ठीक रहेगा। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। मास के अन्त में कुछ परेशानियां उत्पन्न होगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस माह में स्थान परिर्वतन होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। जमीन-जायदाद संबंधी परेशानी कम होंगी। इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– आर्थिक लाभ होकर भी हानि भय लगा रहेगा गुप्त शत्रु से सावधान रहें। कारोबार ठीक रहेगा। इस माह में उदर विकार संबंधित रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–आर्थिक परेशानियों लगी रहेंगी। खर्चे अधिक होंगे। नई योजनायें बनायेंगे। ध न हानि होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में शुभ रहेगा। यात्रा का सुख मिलेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यवसाय मधयम रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा। कारोबार में रुकावटें आयेंगी। नेत्र रोग का भय रहेगा। शत्रु का भय रहेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस माह में वायु विकार होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट से बचें। अर्थ लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रु कमजोर रहेंगे। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– निजीजन से अनबन होने की संभावना रहेगी। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। गुप्त शत्रु से बचें। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा। नेत्र रोग का भय रहेगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। धन लाभ होकर हानि होने का भय रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- धन लाभ होने की संभावना रहेगी। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। व्यवसाय ठीक रहेगा। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। अपमान होने का भय रहेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

दिसम्बर	जनवरी
16 श्री विनायक चतुर्थी **18** चम्मा षष्ठी, स्कन्द षष्ठी **19** भानु सप्तमी **20** दुर्गाष्टमी **21** हरि नवमी गुरु घासी दास जं. **23** मोक्षदा एकादशी व्रत, अन्नपूर्णा जं., किसान दिवस **25** प्रदोष व्रत, ईसा मसीह जं. (क्रिश्चियन डे), पं. मदनमोहन मालवीय जं. **27** पूर्णिमा व्रत **28** श्री दत्तात्रोय जं. **31** सौभाग्यसुन्दरी व्रत	**1** श्री गणेश चतुर्थी व्रत, नववर्ष प्रारम्भ (अंग्रेजी), **5** कालाष्टमी व्रत, गुरु गोविन्द सिंह जं. **8** सफला एकादशी व्रत, स्वरूपी द्वादशी **9** प्रदोष व्रत **11** अमावस्या, श्री लाल बहादुर शास्त्री पु. दि. **13** लोहड़ी **14** श्री विनायक चतुर्थी, मकर संक्रान्ति **15** भारतीय थल सेना दिवस

ग्रहारम्भ मुहूर्त
दिसम्बर–नही हैं।
जनवरी– नहीं हैं।

गृह प्रवेश मुहूत
दिसम्बर– नही हैं।
जनवरी–नही हैं।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
दिसम्बर– नही हैं।
जनवरी–14, 13, 14,

नामकरण संस्कार मुहूर्त
दिसम्बर–23, 26, 30, 31 जनवरी– 4,

सर्वार्थ सिद्ध योग

दिसम्बर	जनवरी
18 ता. सू.उ. से सू.उ. तक 23 ता. सू.उ. से 11:09 तक 25 ता. सू.उ. से 7:40 तक	01 ता. सू.उ. से 12:42 तक 03 ता. सू.उ. से 18:43 तक 04 ता. 21:38 से सू.उ. तक 15 ता. सू.उ. से 24:34 तक

16 जनवरी - 15 फरवरी

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नई-नई योजानओं से लाभ की प्राप्ति होगी। आपको अपने कार्य से लाभ की प्राप्ति होगी। सन्तान पक्ष से चिन्ताऐं बनी रहेगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास मे स्वास्थ्य ठीक-ठीक रहेगा। अपने प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। यात्रा का सुख प्राप्त होगा। वृथाविवाद से दूर रहें।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। क्रोध में निरन्तर वृद्धि होगी। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। आपको अपनो का सहयोग मिलेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो–घरेलू परेशानियों की वृद्धि होगी। आपके प्रियजनों या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपको सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह मे धनहानि होने की संभावना रहेगी। कारोंबार या व्यवसाय व नौकरी में भी कुछ रूकावटें उत्पन्न होंगी। शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। रक्त-पित्त जैसे रोगों से आप ग्रस्त रहेंगे।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी। आपके समय के अनुसार काम होते रहेंगे। आपको राज भय रहेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में सन्तान को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि आयेगी। आपकी आय का स्रोत्र अच्छा रहेगा परन्तु व्यय आय के अनुपात में ज्यादा होगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– प्रियजनों में से किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपको अपनी पत्नि से लाभ प्राप्त होगा। स्थान परिवर्तन होने की संभावना रहेगी। घरेलु अच्छे एवं गुण वाले लोगों से मेल सूत्र बढ़ेगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। धन हानि होने की संभावना रहेगी। कारोबार या व्यवसाय में रूकावटें आयेंगी। आपको प्रियजनों का सुख एवं साथ मिलेगा। शत्रु पक्ष आप पर हावी रहेंगें।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस माह में आपको राज्यभय रहेगा। आपको मानसिक तनाव अधिक रहेगा। शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नेत्र कष्ट जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। कारोबार, व्यवसाय ठीक चलेगा। सम्पत्ति से लाभ प्राप्त होगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- आपको यात्रा में शारीरिक एवं आर्थिक कष्ट होना भी सभंव हैं। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी। आपको पत्नि का सहयोग एवं पूर्ण सुख मिलेगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - मानसिक तनाव अधिक रहेगा। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा अपने कार्य से आपको लाभ की प्राप्ति होगी। आपकी आय का स्रोत्र अच्छा रहेगा परन्तु व्यय आय के अनुपात में ज्यादा होगा। अपने प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

जनवरी	फरवरी
19 दुर्गाष्टमी **22** पुत्रदा एकादशी व्रत **23** नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जं. **24** प्रदोष व्रत **26** पूर्णिमा व्रत भारतीय गणतंत्र दिवस **27** पूर्णिमा (स्नान – दान), भारतीय गणतंत्र दिवस **28** लाला लाजपत राय जं. **30** संकट चौथ, महात्मा गांधी पुण्य दिवस	**3** स्वामी विवेकानन्द जं. तिथि, श्री रामानन्दाचार्य जं., कालाष्टमी **6** षटतिला एकादशी व्रत **8** मास शिवरात्रि, प्रदोष व्रत **10** मौनी अमावस्या **11** श्री बल्लभ जं. **12** श्री दीनबंधु इण्ड्रयूज जं. **13** तिल चतुर्थी, गौरी तृतीया, **14** बसंत पंचमी, सरस्वती जं., वेलेन्टाइन डे

ग्रहारम्भ मुहूर्त

जनवरी– 17, 18, 23, 24

फरवरी – 13

गृह प्रवेश मुहूर्त

जनवरी–नही है।

फरवरी – 13,

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

जनवरी–18, 19, 23, 24 27

फरवरी– 13, 15,

नामकरण संस्कार मुहूर्त

जनवरी– 18, 24, 27

फरवरी–10, 13,

सर्वार्थ सिद्ध योग

जनवरी	फरवरी
18 ता. 20:30 से सू.उ. तक	01 ता. 5:59 से सू.उ. तक
19 ता. सू.उ. से 19:09 तक	06 ता. 14:09 से सू.उ. तक
22 ता. 16:00 से सू.उ. तक	07 ता. 13:46 से सू.उ. तक
23 ता. 15:31 से सू.उ. तक	15 ता. सू.उ. से 24:51 तक
29 ता. 23:54 से सू.उ. तक	

चतुर्थ खण्ड: सन्धि

विजय शर्मा
आगरा

सभा प्रारम्भ होने के समय राजकुमारों ने विष्णु शर्मा से निवेदन किया– "गुरुवार! हमने आपके कमल मुख से विग्रह सुन लिया।

हमने सुना है कि राजा लोग परस्पर सन्धि भी कर लेते हैं, अतः अब हमें सन्धि भी सुनाइये।"

विष्णु शर्मा बोले, "सुनो–मैं तुम्हें सन्धि भी सुनाता हूं। सन्धि प्रारम्भ का यह प्रथम श्लोक है–

वृत्तो महति संगामे राज्ञों: निहतसे नयो:।
स्थेयाभ्यां गृध्र चक्राभ्यां वाचा सन्धि त क्षणात्।।

अर्थात् दोनों राजाओं की सेना के मरने पर और घनघोर युद्ध होने पर गिद्ध और चकवे ने मध्यस्थ बनकर शीघ्र सन्धि करा दी।"

विष्णु शर्मा की बात सुनकर सभी राजकुमार एक स्वर में बोले, "यह कथा कैसी है गुरुदेव?"

विष्णु शर्मा बोले, "सुनो, मैं कहता हूं–"

सन्धि

"बलवान शत्रु से सन्धि कर लेना ही श्रेश्स्कर है।"

किले पर चित्रवर्ण का अधिकार हो जाने के बाद हिरण्यगर्भ ने अपने मन्त्री से कहा, "श्रीमान्!हमारे किले में आग किसने लगाई है, शत्रु ने या शत्रु के सिवाए किसी भेदिए ने जो हमारे किले में रहता है?"

चकवा बोला, "महाराज! आपका प्रिय बन्धु मेघवर्ण नाम का कौआ अपने परिवार सहित नहीं दिखाई दे रहा है, अतः मुझे तो ऐसा प्रतीत हो रहा है कि उसी ने किले में आग लगायी है।"

हिरण्यगर्भ अपने प्रिय मन्त्री मेघवर्ण कौए के बारे में सोचने लगा–कहीं ऐसा तो नहीं कि कौआ भी इस युद्ध में मारा गया हो? अन्त में हिरण्यगर्भ ने चकवे से कहा–

"बात तो आपकी ठीक है–मगर यह भी सोचनीय है कि मेघवर्ण स्वयं युद्ध में मारा जाता तो, यहां कोई न कोई उसके परिवार का सदस्य तो दिखाई देता और न ही उसके मारे जाने की कोई खबर हमें मिली। मुझे तो महाराज, उसी पर पूरा शक है, क्योंकि उसी ने शोर मचाया था या अपने सहयोगियों से शोर मचाने को कहा था, कि वे सब एक साथ मिलकर शोर मचायें, जिससे कि हमारी सेना के हाथ–पैर फूल जाएं और शत्रु की सेना का उत्साह बड़े और वह किले अन्दर बेझिझक घुस जायें।"

"तुम ठीक कहते हो–चकवा, तुम्हारा विचार बिल्कुल ठीक हो सकता है। इससे किसी का दोष नहीं। भाग्य ही हमारे प्रतिकूल था। भली–भांति किया गया कार्य भी दुर्भाग्यवश बिगड़ जाता है।" हिरण्यगर्भ प्रत्युत्तर में बोला।

मन्त्री ने कहा, "ऐसा भी कहा जाता है कि मूर्ख बुरी दशा को पाकर भाग की निन्दा करता है और अपने कर्म का दोष है, ऐसा नही मानता है। जो व्यक्ति हितकारी मित्रों के वचन को नहीं मानता है वह मूर्ख काठ से गिरे हुए कछुए की भांति मारा जाता है।"

"वो कैसे? यह कथा कैसी है, मुझे सुनाओं.....।" राजा बोला।

मन्त्री बोला, "सुनिए महाराज! मैं कहता हूं–।"

परामर्श

"जो कल्याणकारी मित्र की सलाह नहीं मानता वो मारा जाता है।"

मगध देश में फुल्लोत्पल नाम का एक सरोवर है। उसमें संकट और विकट नाम के दो हंस रहा करते थे। उनका एक मित्र था जिसका कम्बुग्रीव था। कम्बुग्रीव एक कछुए का नाम था जो उनके साथ सरोवर में रहा करता था।उनमें बड़ी मित्रता थी वे सरोवर पर बड़े आनन्द से रहा करते थे सारे दिन कछुआ हंसों से बातचीत करता औरअपने मित्रों को सरोवर से कीमती मोती निकालकर खिलाता था तथा उनकी दावत किया करता था।हंस भी अपने मित्र कछुए को अच्छे–अच्छे भोज्य पदार्थ भेंट किया करते थे। एक दिन मछेरे उस सरोवर के किनारे से गुजर रहे थे। पानी में मोटी–मोटी

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

मछलियों को देखकर वे वहीं रुककर आपस में बात करने लगे। उसमें से एक मछेरा बोला, "कल इसी सरोवर पर आकर मछलियां पकड़ेंगे।"दूसरा मछेरा बोला, "कल सवेरे हम जरुर आयेंगे और यहां की मोटी–मोटी मछलियों को तथा सरोवर में घुसे बैठे कछुओं को भी अवश्य पकड़ेगें।"

"हां! तुम ठीक कहते हो।" एक अन्य मछेरा बोला, "कछुओं की तो मुझे आवश्यकता है। मेरे एक मित्र ने मुझसे कल ही एक कछुआ मंगवाया था।, आज तो हमारे हाथ नहीं लगा– हो सकता है कल इस सरोवर से मेरे हाथ कछुआ लग जाए तो मैं अपने मित्र की इच्छा पूरी कर दूं।" उसने कहा।

"वह क्या करेगा, कछुए का?" पहले ने पूछा।

"यह तो मुझे भी मालूम नहीं कि सच क्या है, परन्तु इतना मैंने अवश्य सुना है कि वह कछआ खाएगा।" उसने बताया।

"कछुआ खाएगा...?"दूसरे ने पूछा।

"हां। ऐसा ही कुछ कह रहा था वह और आगे का मुझे पता नहीं कि सच क्या है? यह खाएगा या क्या करेगा?"उसने कहा।

"खाएगा।" पहले ने विश्वासपूर्ण स्वर में कहा,"क्योंकि यह एक बीमारी में दवा का काम करता है।"

"दवा का काम.....!"दूसरे ने अचम्भे से पूछा–"क्या इसकी दवा बनती है?"

"हां.....! आप सच कह रहे हैं।.....तीसरे मछेरे ने बताया–"उस मेरे मित्र को खांसी का रोग है, जो बहुत पुराना हो चुका है। शायद मीट उसी में काम आता हो। खैर–आप इस बात को यहीं छोडिये। यदि कल इस सरोवर में से कोई कछुआ मिल जाता है तो वह मेरे मित्र के नाम का होगा और आपको वह कछुआ मुझे ही देना होगा।"

"सही है–कल ऐसा ही होगा–अब आप लोग घर चलिए, यहीं रात करने का इरादा है क्या?" पहले ने कहा।सब तैयार होकर अपने घर की तरफ रवाना हो गये।संकट और विकट ने मछेरों की बात सुनी। उन्हें चिन्ता हुई कि ये मछेरे कल सवेरे इस सरोवर पर आएंगे और मछलियों के साथ–साथ हमारे मित्र मछुए को भी शिकार करके ल जाएंगे। उन्हें अपने मित्र की अधिक चिन्ता थी इसलिए उन्होंने कछुए को यह समाचार सुनाया।कछुआ समाचार सुनकर बहुत भयभीत हुआ और रक्षा के उपाय सोचने लगा–फिर बोला, "मित्रों! अब मैं क्या करुं? कहां जाऊं? मैं तो पानी से निकलकर कहीं जा भी नहीं सकता। यदि पानी से निकलकर जमीन पर जाता हूं तो कोई न कोई पशु या कोई मनुष्य जाति का बच्चा मुझे पकड़ लेगा और वह मुझे भी मार देगा। आप ही कुछ उपाय करो, मुझे तो अभी से डर लगने लगा है। तुम तो मेरे पुराने मित्र हो–मित्र ही यदि मित्र की सहायता नहीं करेगा तो कौन करेगा!"

कछुआ घबराने लगा था और कल की सोच–सोचकर मरा जा रहा था।इस पर हंस बोले, "अरे भाई! अभी से क्यों परेशान होते हो! जब सुबह होगी तब देखा जायेगा।"

हंसो की बात सुनकर कछुआ बोला, "नहीं भाई नहीं, ऐसा सोचने से तो बहुत हानि हो सकती है। कहा भी गया है कि जो भविष्य की पहले सोच लेता है और अवसर जानकर कार्य करता है, वह सुख को पाता है, किन्तु ऐसा व्यक्ति मारा जाता है–जो सोचता रहता है कि जो होगा देखा जाएगा।"

"यह तुम कैसे कह रहे हो?" उसने कहा।

"सुनो–मैं तुम्हें एक कथा सुनाता हूं–।"कछुए ने कहा।

शेष अगले क्रमांक में..... ❋❋❋

शेष पेज 06 से आगे.....

जाते है। सूँघने की शक्ति क्षीण हो जाती है।

उपाय–परिवार के सभी सदस्य पीले रंग की कौडियाँ एकत्रित करें अथवा खरीद कर लाएँ उन्हें जलाकर राख बना लें। उस राख को पानी में बहा दें।

पितृऋण–कारण–श्राद्ध न करने, मंदिर, या पीपल के वृक्ष को क्षति पहुंचाने, अथवा कुटुम्ब के कुल पुरोहित (ब्राह्मण) बदलने से यह ऋण होता है।

अनिष्ट–बालों पर सफेदी आने के साथ ही दुर्भाग्य का दौर प्रारम्भ हो जाता है। जीवन भर की संचित पूंजी व्यर्थ कार्यो में नष्ट हो जाती है। चोटी के स्थान के बाल उड जाते है। जातक के बारे में झूठी अफवाहें फैलती है निर्दोष होते हुऐ भी कष्ट सहन करने पड़ते है।

उपाय–परिवार के प्रत्येक सदस्य से पैसा इकट्ठा करके मंदिर में दान दे या घर के समीपस्थ मंदिर की सेवा करे। पीपल के वृक्ष की देखभाल करें।

निर्दयीऋण–कारण–जीव हत्या करना या धोखा देकर किसी का मकान छीन लेना या उसका मूल्य न चुकाना।

अनिष्ट–परिवार पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ता है। अग्निकाण्ड होते है। घर ढह जाते है। परिवार के सदस्य दुर्घटना का शिकार होते है। उन्नति में अनेक बाधाऐं आती है।

उपाय–परिवार के सभी सदस्यों से धन एकत्रित करके एक दिनएक साथ सौ मजदूरों को भोजन खिलाना चाहिये।

अजन्मे का ऋण–कारण–जिन लोगों से वास्ता पड़े, उनके साथ धोखा–धडी करके उनका वंश नाश कर देना।

अनिष्ट–जातक को सगे–संबंधियों से भी धोखे का सामना करना पड़ता है। शारीरिक चोट, कार्य, व्यवसाय में हानि, निराधार आरोप, निर्दोष होते हुए भी उसे जेल जाना पड़ता है। सोचने विचारने की शक्ति क्षीण हो जाती है।

उपाय–परिवार के प्रत्येक सदस्य से एक–एक नारियल लेकर एक दिन बहाने से इस ऋण से मुक्ति मिलती है।

ईश्वरीय ऋण–कारण–बुरी नीयत के कारण किसी के पुत्र की हत्या या कुत्ते का नाश किया हो।

अनिष्ट–जातक का कुटुम्ब बर्बाद हो जाता है। जातक की संतान नहीं होती, अगर होती है तो अपाहिज होती है। जमा पूँजी व्यर्थ के कार्यो में नष्ट होती है।

उपाय– कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्य से धन एकत्र करके 100 कुत्तों को भोजन कराने से इस ऋण से मुक्ति मिलती है।

इसप्रकार लाल किताब में अनिष्ट ग्रहों के संकेत व निशानियाँ दी है। जिन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। विस्तृत जानकारी के लिये ज्योतिषीय परामर्श लेकर ही उपाय करें। ❋❋❋

शेष पेज 12 से आगे.....

अद्वैत की भी है, द्वैत और विशिष्ठा द्वैत की भी है। इसमें ईश्वर को न मानने वाले नास्तिक के लिए भी स्थान है। और चार्वाक जैसे ईश्वर के न मानने वाले नास्तिक के लिए भी अपनी–अपनी इच्छानुसार चलने की छूट है। बड़े–बड़े विद्वानों, ऋषियों ने हजारों साल में इस धर्म का विकास किया है।

हिन्दू धर्म के मूल सिद्धान्त है–

1. वेदों को प्रमाणित धर्म, ग्रन्थ मानना।
2. ईश्वर में विश्वास ओर विभिन्न रूपों में उपासना
3. जीवन में नैतिक आचरण पर जोर।
4. कर्म, पुनर्जन्म और मोक्ष के सिद्धान्तों पर विश्वास

हिन्दू धर्म ग्रन्थ

1. श्रुति 2. स्मृति

श्रुति– परमात्मा के पास से साक्षात सुनी वाणी, श्रुति है। इसके अन्तर्गत वेद से लेकर उपनिषद तक आते है।

स्मृति– स्मरण की गयी या विचार करके जो शास्त्र रचे गये है वह स्मृति है। इसके अन्तर्गत छः वेदांग, धर्मशास्त्र इतिहास, पुराण एंव नीती के सभी ग्रन्थ आते है।

हिन्दू धर्म के मुख्य महान ग्रन्थ है– रामायण, श्रीमद भागवत एंव महाभारत स्मृतियाँ– 18 से 56 तक हैं, पुराण–18 है। पुराण का अर्थ है। पुरातन, प्राचीन (पुरा अपि नव पुराणम), पुराना होने पर भी सदैव नवीन रहे, तथा जो पूर्व में भी सजीव था और आज भी सजीव है। जो फल, यज्ञ, दान, तपस्या एंव तीर्थो से मिलता है। वही फल पुराणों के श्रावण मात्र से मिलता है। पुराण वेदार्थ के बोधक है, पुराणों में वेदों की व्याख्या विविध कथाओं और दृष्टान्तों के द्वारा दी गयी है। तथा पुराणों के ज्ञान बिना वेदों का ज्ञान पूर्ण रूपेण नही हो सकता (''वेदः प्रतिष्ठिता सर्वे पुराणेष्येद सर्वदा'' नारद उ0 24/18)

पुराणों के पांच लक्षण बताते है–

सर्गश्च प्रति सर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरिंत चैव पुरांण पंचलक्षणम।। (देवी भागवत1/2/18)

सतपुरूषों ने यह भी कहा है, जो द्विज अंगो सहित चारों वेदो को जानता है किन्तु पुराणों को नही जानता वह कदापि पण्डिंत नही हो सकता। पुराणों से वेदव्यास जी ने एक अर्थ निकाला है (परोपकारः पुण्यायः पुण्याय परपीडनम) अर्थात दूसरों का उपकार करना ही पुण्य है और दूसरों को सताना ही पाप है। महर्षि वेदव्यास जी ने पुराणों, उपपुराणों, ब्रह्ममसूत्र, व्यास स्मृति, महाभारत आदि के रचियता है। महर्षि वेदव्यास जी वशिष्ठ मुनि के प्रपौत्र शक्ति ऋषि के पौत्र पारशर के पुत्र और महाभारत श्री सुखदेव जी के पिता है। महर्षि वेदव्यास ने जहाँ ब्रहासूत्र में आध्यात्म दर्शन एवं ब्रह्मतत्व का निरूपण किया है, वही पुराणों तथा महाभारत में भक्ति, सदाचार और इतिहास के प्रतिपादन के साथ ही लोक जीवन की उत्तम रीति, निति भी प्रतिपादित की है। अपने आचरणों से उन्होनें सदाचार, धर्माचरण, त्याग, तपस्या, और भगवत भक्ति का संदेश प्रचारित किया है। उनका सारा जीवन कल्याण के लिए अर्पित रहा है। श्रीमद भागवत गीता जैसा अनुपम रत्न, व्यास रचित महाभारत में ही उपनिपवद्व है। उसमें अपार करूणा, दयालुता, मृदुलता, शील, विनय, तप, इन्द्री निग्रह तथा संतोष की प्रतिष्ठता है। (1)पुराणों के पठन एंव श्रावण मास से सभी पाप नष्ट हो जाते है। (2) अधर्म का ज्ञान होता है।(3) सदाचार की प्रवृत्ति होती है।(4) भगवान में भक्ति होती है, जिसके द्वारा मोक्ष की प्राप्ति होती है।

आस्तिक एंव नास्तिक दर्शनो में गहरा चिंतन है। प्राणी मात्र को जीवन का आनन्द कैसे मिले। इसकी उसने गहराई से खोज की गयी है। सभी मानते है कि परमपिता परमेश्वर की प्राप्त के लिए, आनन्द प्राप्त के लिए, मुक्ति एंव मोक्ष के लिए इसकी सबसे पहली अनिवार्य शर्त है शुद्ध और पवित्र जीवन, नैतिक आचरण। मनु महाराज ने कहा है– बुद्धिमान व्यक्ति केवल नियमों का ही नित्य पालन न करें, नियमों का भी पालन करें। जो केवल नियमों का ही पालन करता है। वह पतित होता है।

यम– ब्रहमचर्य, दया, क्षमा, ध्यान, सत्य, नम्रता, अंहिसा, चोरी न करना, मधुर स्वाभाव, और इन्द्रियों का दमन

नियम– स्नान, मौन, उपवास, यज्ञ, इन्द्रियों का निग्रह, गुरूसेवा, क्रोध न करना, प्रमाद न करना। हम सही अर्थों में जब ही हिन्दू है जबकि हिन्दू धर्म का पालन करें और हिन्दू धर्म के पालन के आनन्द की, मुक्ति एंव मोक्ष की प्राप्ति होना संभव नही है, जिसे प्राप्त करना प्रत्येक जीवधारी प्राणी का सही जीवन का लक्ष्य होता है। शास्त्र कहते है कि 84 लाख योनियों में भटकने के बाद जीव को मनुष्य शरीर भगवान की असीम कृपा से प्राप्त होता है और उसे इस मानव योनि में ही अवसर प्राप्त होता है। कि वह अपने भविष्य का निर्माण करें, यदि भोग शक्ति में पड़कर वह अपना जीवन पशुवत, पापाचरण के द्वारा निर्वाह करता है। तो स्वभावतः उसे इस भटावनी चौरासी लाख योनियों में भटकना ही पड़ेगा और पापाचरण करने पर नरक की प्रचण्ड यातनाऐं भी भोगनी पड़ेगी।

यदि मानव, शास्त्र पुराणों के कथानुसार सदाचार धर्म से युक्त अपनी जीवनचर्या चलाता है और सदगुरू की शरणागत में होकर गुरू कृपा से तब ही आत्म कल्याण करने में पूर्णतः समर्थ रहता है।

गीता में– भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि–

'' वस्तुतः हम ही अपने आपके मित्र एंव शत्रु है।''

''जय श्री कृष्ण'' ❋❋❋

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड **(Lab Certified)** कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की **100%** शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

शेष पेज 07 से आगे.....

गयीं। उनके श्रीविग्रह से करोड़ों सूर्यो के समान प्रकाश फैल रहा था। असंख्य कामदेवों से भी सुन्दर उनका सौन्दर्य था। उन्होंने रमणीय वस्त्राभूषणों को धारण कर रखा था और वे नाना प्रकार के भ्रमरों से युक्त पुष्पों की माला से शोभायमान थीं। वे चारों ओर से असंख्य भ्रमरों से घिरी हुई थीं भ्रमर 'ह्रीं इस शब्द को गुनगुना रहे थे। उनकी मुट्ठी भ्रमरों से भरी हुई थी।

उन देवी का दर्शन कर देवता पुनः स्तुति करते हुए कहने लगे–सृष्टि, स्थिति और संहार करने वाली भगवती महाविद्ये! आपको नमस्कार है। भगवती दुर्गे! आप ज्योति स्वरुपिणी एवं भक्ति से प्राप्त्य है, आपको हमारा नमस्कार है। हे नीलसरस्वती देवि!उग्रतारा, त्रिपुरसुन्दरी, पीताम्बरा, भैरवी, मातंगी, शाकम्भरी, शिवा, गायत्री, सरस्वती तथा स्वाहा–स्वधा–ये सब आपके ही नाम हैं। हे दयास्वरुपिणी देवि! आपने शुम्भ–निशुम्भ का दलन किया है, रक्तबीज और वृत्रासुर तथा धूम्रलोचन आदि राक्षसों को मारकर संसार को विनाश से बचाया है। हे दयामूर्ते! धर्ममूर्ते! आपको हमारा नमस्कार है। हे देवि! आपके इस लीला रुप को हम नित्य प्रणाम करते हैं–

भ्रमरैर्वेष्टिता यस्माद् भ्रामरी या ततः स्मृता।।
तस्यै देव्यै नमो नित्यं नित्यमेव नमो नम।।

इस प्रकार बार–बार प्रणाम करते हुए देवताओं ने ब्रह्मा जी के वर से अजेय बने हुए अरुण दैत्य से प्राप्त पीड़ा से छुटकारा दिलाने की भ्रामरी देवी से प्रार्थना की।

करुणामयी माँ भ्रामरी देवी बोलीं–'देवताओं! आप सभी निर्भय हो जायँ। ब्रह्मा जी के वरदान की रक्षा करने के लिये मैंने यह भ्रामरी–रुप धारण किया है। अरुण दानव ने वर माँगा है कि मैं न तो दौ पैर वालों से मरुँ और न चार पैर वालों से, मेरा यह भ्रमर रुप छः पैरों वाला है, इसीलिये भ्रमर षट्पद भी कहलाता है। उसने वर माँगा है कि मैं न युद्ध में मरुँ न किसी अस्त्र–शस्त्र से। इसीलिये मेरा यह भ्रमर रुप उससे न तो युद्ध करेगा और न अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग करेगा। साथ ही उसने मनुष्य, देवता आदि किसी से भी न मरने का वर माँगा है, मेरा यह भ्रमर रुप न तो मनुष्य है और देवता ही। देवगणो! इसीलिये मैंने यह भ्रामरी–रुप धारण किया है। अब आप लोग मेरी लीला देखिये।' ऐसा कहकर भ्रामरी देवी ने अपने हस्तगत भ्रमरों को तथा अपने चारों ओर स्थित भ्रमरों को तथा अपने चारों ओर स्थित भ्रमरों को भी प्रेरित किया, असंख्य भ्रमर 'ह्री–ह्रीं' करते उस दिशा में चल पड़े जहाँ अरुण दानव स्थित था।

उन भ्रमरों से त्रैलोक्य व्याप्त हो गया। आकाश, पर्वत, श्रृंग, वृक्ष वन जहाँ–तहाँ भ्रमर–ही भ्रमर दृष्टिगोचर होने लगे। भ्रमरों के कारण सूर्य छिप गया। चारों ओर अन्धकार–ही अन्धकार छा गया। यह भ्रामरी देवी की विचित्र लीला थी। बड़े ही वेग से उड़ने वाले उन भ्रमरों ने दैत्यों की छाती छेद डाली। वे दैत्यों के शरीर में चिपक गये और उन्हें काटने लगे। तीव्र वेदना से दैत्य छटपटाने लगे। किसी भी अस्त्र–शस्त्र से भ्रमरों का निवारण करना सम्भव नहीं था। अरुण दैत्य ने बहुत प्रयत्न किया, किंतु वह भी असमर्थ ही रहा। थोडे ही समय में जो दैत्य जहाँ था, वहीं भ्रमरों के काटने से मरकर गिर पड़ा। अरुण दानव का भी यही हाल रहा। उसके सभी अस्त्र–शस्त्र विफल रहे। देवी ने भ्रामरी–रुप धारण कर ऐसी लीला दिखायी कि ब्रह्मा जी के वरदान की भी रक्षा हो गयी और अरुण दैत्य तथा उसकी समूची दानवी सेना का संहार भी हो गया। ❋❋❋

शेष पेज 04 से आगे.....

–घर के बाहर जब भी किसी प्राप्ति के उद्देश्य से अथवा धन संबंधी किसी कार्य को निकलें तो निर्जल, निराहर न निकलें। कुछ न कुछ खा अवश्य लें। निकलने से पूर्व यदि मीठा दही खाकर निकलें तो और भी सौभाग्यशाली है।

–किसी सुहागन स्त्री का गुरुवार के दिन सुहाग पिटारी अथवा श्रृंगार प्रसाधन देने से लक्ष्मीजी प्रसन्न होती है।

–महिलाओं का आदर करने से तथा कुआरी कन्याओं (दस वर्ष से कम की) देवी स्वरुप मानकर प्रसन्न करने से सुख–समृद्धि की वृद्धि होती है।

–सफेद वस्तुओं का दान करने से लक्ष्मी जी आकर्षित होती है।

–गुरुवार को घर के बच्चे तथा कुंआरी कन्या हल्दी मिश्रित चावल चिड़ियों को खिलाएं तो ग्रह पीड़ाओं का शमन होता है और घर में सुख–शान्ति बढ़ती है।

किसी दरिद्र अथवा असहाय व्यक्ति की निःस्वार्थ भाव से सेवा कर सकते है तो कर दें, उसका तिरस्कार अथवा उपहास कदापि न करें।

इस अध्याय में सूत्र रुप से ही ये परम प्रभावशाली टोटके संग्रहित किए गए है, इनकी व्याख्या और लाभों का विवेचन नहीं किया गया। इसका कारण यही है कि इनमें से अधिकांश के बारे में लगभग सभी व्यक्ति जानते है और कुछ तो अपनाते भी है। वैसे भी इनके प्रयोग के लिए किसी विशिष्ट विधि–विधान की आवश्यकता नहीं, ये तो वे बाते है जिनको हमें अपनी आदत ही बना लेनी चाहिए। इन कार्यो को करने पर जहां ईश्वर और सभी देवी–देवता आप पर परम कृपालु बने रहेंगे, वहीं घर में सुख–शान्ति और धन–वैभव की वृद्धि भी स्वयं ही होती रहेगी। इन्द्रजाल और तंत्रशास्त्र की पुस्तकों में इन प्रयोगों को धन वैभव एवं ऐश्वर्य प्रदायक तथा सर्वकामना पूर्वक बतलाया गया है। अधिकांश धार्मिक ग्रंथों में भी इन्हें प्रत्येक सद्गृहस्थ द्वारा अपनाएं जाने वाले अनिवार्य कार्यो के रुप में विवेचित किया गया है। सबसे बड़ी बात यह है कि सतत् रुप में ये कार्य करते रहने पर हमें स्थायी रुप से लाभ प्राप्त होता रहता है। इस प्रकार हमारा घर एक आदर्श घर तो बन जाता है, घर–दुकान में लक्ष्मीजी का सतत् वास भी बना रहता है। ❋❋❋

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड **(Lab Certified)** कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की **100%** शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

शेष पेज 11 से आगे.....

में श्रेष्ठ होता है।

वरीयान-यह योग यदि जन्म के समय है तो जातक श्रेष्ठ शिल्प कला एवं काव्य कला में निपुण होता है।

परिघ-जातक अपने कुल की वृद्धि करने वाला, शास्त्र ज्ञाता कवि, चतुर, दानी, भोगी एवं प्रियवादी होता है।

सिद्धि-यह जातक सिद्धि प्रदाता, मन्त्रों के सिद्ध करने वाला सुंदर पत्नी वाला एवं सम्पत्तिवान होता है।

साध्य-मानसी सिद्धि सम्पन्न, यशस्वी, सुखी, दीर्घसूत्रो, प्रसिद्ध एवं सर्व प्रिय होता है।

शुभ- शुभशतैर्युक्तो धनवानपिजायते।
विज्ञानशास्त्र सम्पन्नो दाता ब्राह्मण पूजक।।

शुभ कार्मो को करने वाला, धनी, विज्ञान एवं शास्ज्ञाता, दाता एवं ब्राह्मणों की पूजा सम्मान करने वाला होता है।

शुक्ल- इस योग में जन्मा व्यक्ति सब कलाओं में युक्त ज्ञानवान, प्रतापी, वीर, धनी, एवं सबका प्रिय होता है।

ब्रह्म- ब्रह्म योग महाविद्वान वेदशास्त्र परायणः।
ब्रह्म ज्ञान रतो नित्यं सर्वकार्येषु कोविदः।।

ब्रह्म योग में जन्मा जातक महान विद्वान वेदशास्त्र अध्ययन करने वाला, ब्रह्मज्ञान, का सभी कार्यो में प्रवीण होता है।

ऐन्द्र- इस योग में पैदा, हुआ जातक राजकुल के गुण वाला अल्पायु, सुखी, भोगी एवं गुणवान होता है।

वैधृत- वैधृतो जायमानस्तु निरुत्साहो बुभुक्षितः।
कुर्वाणोऽपि जनैः प्रीति प्रयात्यप्रियता नरः।।

इस योग में जन्म लेने वाला उत्साह रहित, धनहीन, लोगों से प्रेम करते हुये भी अप्रिय, अलोकप्रिय होता है।

जन्म करण प्रभाव

बव- बवारुये करणे जातो मानी धर्मरतः सदा।
शुभ मंगल कर्ता चस्थिर कर्मा च जायते।।

बव नाम करण में जन्म लेने वाला सदा धर्म परायण शुभ एवं मांगलिक कार्यो को करने वाला तथा स्थिर कार्यो को करने वाला होता है।

बालव- इस करण में उत्पन्न जातक तीर्थ एवं देवोपासक विद्याधन से युक्त राजमान्य होता है।

कौलव- कौलवे च नरो जातःप्रीतिः सर्व जनैः सह।
संगतिर्मित्रवगैश्च मान वैश्च प्रजायते।।

इस करण में जन्म लेने वाला सभी का प्रेमी होता है स्वयं सबसे प्रेम रखता है। मित्र प्रिय होता है।

तैतिल- तैतिले करणे जातः सौभाग्य गुण संयुतः।
स्नेहः सर्वजनैः सह विचित्राणि गृहाणि च।।

तैतिल करण में जन्मा व्यक्ति भाग्यशाली, गुणी, सबका प्रेमी तथा सुंदर घरों का स्वामी होता है।

गर- इस करण में जन्मा व्यक्ति कृषि कर्म करने वाला गृह कार्य प्रवीण, उद्यमी एवं अपना अभीष्ट सिद्ध करने वाला होता है।

वणिज- वणिज करणे जातो वाणिज्ये नैव जीवति।
वाञ्छिंत लभते देशान्तर गमागमै।।

वाणिज करण में जन्मा व्यक्ति व्यापारिक यात्राओं से धन कमाने वाला तथा देश देशांतर में गमन का मनचाहा लाभ लेने वाला होता है।

विष्टि- इस जन्म करण वाला व्यक्ति अशोभनीय कार्य करने वाला, विषकार्य करने वाला तथा परघात में निपुण होता है।

शकुनि- शकुनों करणे जातः पोष्टिकादिक्रिया कृती।
औषधादिसु दक्षश्च भिषग्वृत्तिश्च जायते।।

शकुनि करण में उत्पन्न जातक पौष्टिक क्रियायें करने वाला, औषधि विज्ञान में पारंगत चिकित्सक होता है।

चतुष्पाद- इस करण में जन्मा जातक देव ब्राह्मणी सेबक गौरक्षक गौपालक तथा पशु चिकित्सिक होता है।

नाग- नागारुये करणे जातः स्थावर प्रीति कारकः।
कुसते दासण कर्म दुर्भगो लोक लोचनः।।

जन्म नाग करण में हो तो जातक स्थावरो से प्रेम करने वाला प्रकृति प्रेमी, दारुण कर्म करने वाला, अभागा, चंचल, हष्टि युक्त होता है।

किस्तुघ्न- किंस्तुघ्ने करणे जातःशुभ कर्मरतो नरः।
तुष्टि, पुष्टि चमांगल्य सिद्धि चलभते सदर।।

इस करण में जन्मा जातक शुभ कर्मरत तुष्टि, पुष्टि एवं मांगलिक सिद्धि प्राप्त कर्ता होता है। ❋❋❋

शेष पेज 12 से आगे.....

न लगायें। कायगुप्ति में गर्भवती स्त्री अल्हडता से न चले, निरुद्वेश्य व चंचलता से भ्रमण न करे तथाा उसका खड़ा रहना, बैठना, सोना और चलना आसंयमित न हो।

त्रिगुप्ति साधना के अतिरिक्त गर्भवती स्त्री का भोजन तामसिक न हो। वह अतितीखे, अति कडवे, अति खट्टे, अति कसैले और अति मीठे पदार्थों का उपयोग न करे। भोजन में तीव्र आसाक्ति न हो। भोजन समय पर और निर्धारित मात्रा में ही करें। साथ ही उसकी वृति धार्मिक हो और वह चिन्ता, भय, घुटन और कुण्ठा से मुक्त रहें क्योंकि गर्भावस्था में संस्कारों का सक्रंमण अज्ञात रूप में होता है। और जन्म के बाद उनका प्रभाव प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। जैसी माँ होती है, उसकी संतति भी वैसी ही होती है।

❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262